श्री महावीराय नमः

जय गुरु हीरा श्री कुशलरत्नगजेन्द्रगणिभ्यो नमः जय गुरु मान

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

रत्नम्

वर्ष–2, अंक–39 31 अक्टूबर, 2019 जोधपुर (राज.)

हिन्दी पाक्षिक पृष्ठ–40 मूल्य 5/– प्रति अंक

RNI No. RAJHIN/2015/66547

अहंकार (Ego) को छोड़ें

क्या सामायिक जैसी क्रिया करके कोई किसी से लड़ सकता है? सबसे पहला धर्म है–खंती यानी क्षमा। आपका कोई शत्रु भी है तो उसे भी क्षमा कर दो। उसे ही नहीं, आपको अपने आप पर भी दया आनी चाहिए और क्षमा करने का ध्यान रहना चाहिए। दी जाने वाली और ली जाने वाली शिक्षा हो सकती है, पर ज्ञान भीतर से निकलता है। जब तक आपको यह ज्ञात नहीं कि मैं श्रावक हूँ, मैं साधु हूँ तब तक धृष्टता होती रहेगी। आप वास्तव में श्रावक हैं तो आपकी सभा में किसी के साथ लड़ाई नहीं हो सकती, झगड़ा नहीं हो सकता। राजनैतिक सभा में लड़ाई हो सकती है, श्रावकों की सभा में नहीं। लड़ाई विभाव को लेकर होती है। धन–वैभव, सत्ता–सम्पत्ति, पद–प्रतिष्ठा, अहंकार जगाने वाले होते हैं। अहंकार लड़ाई का कारण है। श्रावकत्व कभी लड़ने–लड़ाने वाला नहीं हो सकता।

–हीरा प्रवचन–पीयूष भाग 5 से साभार

महामंत्री की कलम से

आदरणीय रत्नबन्धुवर,

सादर जय जिनेन्द्र !

देव, गुरु धर्म के पुण्य प्रताप से आप सपरिवार स्वस्थ एवं प्रसन्न होंगे।

जिनशासन गौरव, परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर 1008 श्री हीराचन्द्रजी म.सा. आदि ठाणा पाली में, उपाध्यायप्रवर पण्डितरत्न श्री मानचन्द्रजी म.सा. आदि ठाणा सूर्यनगरी जोधपुर में एवं प्रभृति संत-सतीवृन्द अपने-अपने चातुर्मास स्थलों पर सुख-शांतिपूर्वक विराजमान हैं। आचार्यप्रवर, उपाध्यायप्रवर एवं संत- सतीवृन्द की प्रभावी प्रेरणा से चातुर्मासकाल में सभी स्थानों पर सामायिक-स्वाध्याय एवं धर्माराधना के कार्यक्रम सुचारू रूप से चल रहे है। महापुरुषों की पावन प्रेरणा से सभी स्थानों पर विभिन्न कार्यक्रमों के साथ ज्ञानाराधना, दर्शनाराधना, चारित्राराधना, तपाराधना चल रही है। सभी श्रावक-श्राविका नियोजित कार्यक्रमों में उत्साहपूर्वक भाग ले रहे हैं। सभी संत-सतीवृन्द के स्वास्थ्य में समाधि बनी हुई है।

संघ की ओर से युवारत्न श्री विकासजी गुन्देचा एवं उनकी टीम द्वारा अथक प्रयासों से रत्नसंघ वेबसाईट एवं एप्प का निर्माण किया गया है, जिसके माध्यम से रत्नसंघीय समाचारों का आदान-प्रदान किया जा रहा है, जिसके अन्तर्गत विचरण-विहार एवं सभी सहयोगी संस्थाओं की गतिविधियों की जानकारी रत्नसंघ के सदस्यों को दी जा रही है। अनेक श्रावक-श्राविकाओं ने रत्नसंघ एप्प को डाउनलोड किया है, जिसके माध्यम से त्वरित समाचार प्राप्त हो रहे हैं। जिन सदस्यों ने अभी तक अपने मोबाइल में एप्प डाउनलोड नहीं किया है, उनसे निवेदन है कि वे जल्द से जल्द रत्नसंघ एप्प से जुड़े तथा अपने सम्पर्क में आने वाले गुरु भ्राताओं को एप्प से जोड़ने का प्रयास करें।

सामायिक-स्वाध्याय के प्रबल प्रेरक इतिहास मार्तण्ड, प्रातःस्मरणीय, परम पूज्य गुरुदेव श्री हस्तीमलजी म.सा. का 100 वां दीक्षा दिवस माघ शुक्ला 2, रविवार, 26 जनवरी, 2020 को उपस्थित हो रहा है। आचार्य हस्ती का दीक्षा शताब्दी वर्ष 26 जनवरी, 2020 से 27 जनवरी, 2021 तक चलेगा। इस पावन प्रसंग को सामायिक- स्वाध्याय, धर्माराधना, ज्ञानाराधना के साथ मनाने का सुअवसर रत्नसंघ को प्राप्त हो रहा है। साथ ही आचार्य हस्ती द्वारा प्रेरित श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर का हीरक जयन्ती वर्ष (75 वां) भी उपस्थित हो रहा है। संघ एवं संघ की सहयोगी संस्थाएँ शताब्दी वर्ष को मनाने के लिए विभिन्न कार्यक्रम आयोजित करने की तैयारी कर रहे है, इस सम्बन्ध में आप सभी गुरु भ्राताओं से निवेदन है कि आप अपने सकारात्मक सुझाव संघ कार्यालय को प्रेषित करावें, जिससे दीक्षा शताब्दी वर्ष के कार्यक्रम को व्यवस्थित रूप दिया जा सके। इस कार्यक्रम के अन्तर्गत ज्ञानाराधना-दर्शनाराधना-चारित्राराधना-तपाराधना के साथ आध्यात्मिक कार्यक्रम रखने का लक्ष्य है।

आप-हम-सब संघ उन्नयन में सजगता एवं जागरुकता बनाये रखें, इसी मंगल मनीषा के साथ।

-धनपत सेठिया, राष्ट्रीय महामंत्री

पूज्य आचार्यप्रवर की पावन प्रेरणा से अपूर्व धर्माराधना

जो सूरज सम तेजस्वी हैं, श्रमणों में श्रेष्ठ यशस्वी हैं, जो ज्ञान क्रिया वर्चस्वी है, ऐसे संघ शिरोमणी आगमज्ञ, प्रवचन प्रभाकर, दिव्य दिवाकर, ज्ञान सुधाकर, गुणरत्नाकर, सामायिक-शीलव्रत-रात्रि भोजन त्याग-व्यसन मुक्ति के प्रबल प्रेरक, जिन शासन गौरव, परमाराध्य परम श्रद्धेय परम पूज्य आचार्य प्रवर श्री 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा. महान् अध्यवसायी, सरस व्याख्यानी श्रद्धेय श्री महेन्द्र मुनिजी म. सा. आदि संत रत्नों के पावन वर्षावास का लाभ पालीवासियों को असीम पुण्यवानी से मिला हुआ है। साधना-आराधना का क्रम यथाशक्य गतिमान है। साधना सुमेरू पूज्य गुरुदेव की कृपा किरण से भक्तिमान श्रद्धालुओं ने उग्र तपस्या का अर्ध्य पूज्यपाद के पादयुग्मों में अर्पित कर चातुर्मास के गौरव को अभिवर्धित किया है तथा कुछ और भाई भी तप अनुष्ठान में पुरुषार्थ कर रहे हैं।

विगत मासान्त 22 अगस्त से दुःख विपाक सूत्र की वाचना पूर्ण होने पर सुखविपाक सूत्र की वाचना प्रारम्भ हुई; महान अध्यवसायी श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनि जी म. सा. दोपहर समय 2 से 3 बजे के मध्य सरल विवेचन करते हुए आगम-रहस्यों को उद्घाटित कर रहे हैं। 24 को संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री प्रकाशजी टाटिया पूज्य गुरु भगवन् की सेवा सन्निधि में आये। सूरत संघ संतों के आगामी चातुर्मास की विनति लेकर संघ नायक की सेवा में उपस्थित हुआ। 26 से नवरंगी की साधना प्रारम्भ हुई। विगत वर्षो की भांति इस वर्ष भी अपने आराध्य की चरण सन्निधि में पर्वाधिराज पर्युषण में साधना-आराधना का लक्ष्य लिये कई स्थलों से श्रद्धालु गुरुभक्त, परमोपकारी कल्याणकारी पूज्य प्रवर की आनन्द प्रदात्री छत्रछाया में पूर्व संध्या पर ही विराजित स्थल पर आ पहुंचे।

27 अगस्त पर्वाधिराज पर्युषण के प्रारम्भ से नवकार मंत्र का अष्ट दिवसीय अखण्ड जाप का क्रम चला। प्रातः कालीन प्रार्थना सदैव की तरह श्रद्धेय श्री रवीन्द्र मुनि जी म.सा. द्वारा सम्पादित की गई। अंतगडदसा सूत्र का वाचन श्रद्धेय श्री विनम्रमुनि जी म.सा. ने स्पष्ट बोधगम्य धारा प्रवाह शैली के माध्यम से किया। श्रद्धेय श्री योगेश मुनि जी म.सा. ने **विनय गुण का धारण : अहंकार का निवारण** की बात रखते हुए श्रद्धावान बनने की प्रेरणा की। महान अध्यवसायी श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनि जी म.सा. ने सार्वजनीन-सार्वकालिक- सार्वभौमिक पर्व पर आत्मा के संवर्धन पर प्रभावी प्रवचन फरमाया। परमाराध्य पूज्य गुरुदेव ने प्रत्याख्यान करवाते हुए मांगलिक फरमाने की कृपा की। ज्ञान साधना दिवस पर आह्वान किया कि विनय गुण, व्रत धारण, अहंकार का निवारण ही ज्ञान का फल है। 28 अगस्त दर्शन विशुद्धि दिवस पर फरमाया कि समकित का सम्बन्ध आत्मभावों से है। 29 अगस्त चारित्र साधना दिवस पर बताया कि चारित्र नैतिकता की नींव है जबकि चरित्र कंगूरा है। 30 अगस्त तप साधना दिवस पर तप का भूषण क्षमा व तप का दूषण क्रोध व तप का प्रदूषण प्रदर्शन कहा। 31 अगस्त दान दिवस पर सम्बोधन कर कहा कि पुण्य से पाया है तो मुक्त हस्त से विसर्जन का लक्ष्य रखें। 1 सितम्बर संयम साधना पर संयम को समस्त

समस्याओं का समाधान बताया। आज जोधपुर से सुश्राविका श्रीमती संतोषजी डोसी धर्मसहायिका श्री बहादुरमलजी डोसी ने 45 दिवसीय उग्र तपस्या के व ब्यावर से गुरुचरणों में आये श्री प्रकाशचंद जी मेहता व श्री राजेन्द्र जी सुराणा ने 6 में 3 मिलाकर नौ दिवसीय तपस्या के प्रत्याख्यान पूज्य गुरुदेव के पावन मुखारविन्द से लिये। 2 सितम्बर आत्मशुद्धि दिवस पर भूल को भूल नहीं मानना विकृति, भूल को स्वीकारना संस्कृति व भूल को सुधारना प्रकृति बताया। 3 सितम्बर को संवत्सरी महापर्व पर क्षमा धारण कर ऋजु बनने की प्रशस्त प्रेरणा की। श्रद्धेय श्री रवीन्द्र मुनि जी म.सा. ने पर्वाधिराज में दोपहर 2 से 3 बजे के मध्य कल्पसूत्र की वाचना के साथ भावार्थ सरल व सार संक्षेप में रख धर्मसभा में उत्सुकता को बनाये रखा। संवत्सरी महापर्व पर आचार्य पट्टावली का क्रमबद्धता से पूर्ण आत्मविश्वास के साथ उल्लेख किया। तत्पश्चात् श्रद्धेय श्री आशीष मुनिजी म.सा. ने वृहदालोयणा का सस्वर सामूहिक पठन करवाया। आज ही वीर धर्म सहायिका श्रीमती सौभाग्यवती जी के सुपुत्र एवं श्रद्धेय श्री दयामुनि जी म.सा. के सांसारिक सुपुत्र श्री अशोक कुमार जी सिंघवी वीर पुत्र ने मासक्षपण के पूज्य आचार्य भगवन्त के पावन मुखारविन्द से प्रत्याख्यान लेकर पहला 30 दिवसीय तपाराधना का अर्ध्य पावन श्री चरणों में अर्पित किया। पर्वाधिराज में ही पाली के भाई/बहिनों को संस्कारों के बीजारोपण के लिये अपनी-अपनी संतति को संस्कार पाठशालाओं में भेजने की प्रेरणा के फलस्वरूप 29 अगस्त से संस्कार शाला अब विधिवत चल रही है।

पर्वाधिराज पर्युषण के प्रारम्भ में, मध्य में व अन्तिम दिनों में तेले की आराधना सम्पन्न हुई। दिवस भर का वातावरण धर्ममय बना रहा। दया-संवर व पौषध की उपासना भी प्रायः हर दिन प्रवाहमान रही। श्री धर्मेश जी लोढ़ा मुम्बई ने हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी मौन पूर्वक अठाई तप की आराधना की। इसके अतिरिक्त 17 अठाइयाँ, चार 9 दिवसीय श्री राकेश जी सूर्या ने 11 दिवसीय श्रीमती मंजू जी सूर्या ने 15 दिवसीय श्रीमती विनीता जी गोलेच्छा ने 17 दिवसीय तपाराधना कर तप अनुष्ठान में योगदान किया। संवत्सरी पर धर्मसभा स्थल समूचा भरा हुआ था। वैसे आठों ही दिन उपस्थिति बहुत अच्छी रही। 12 प्रहर, अष्ट प्रहर, ग्यारहवें व दसवें पौषध की आराधना कई श्रद्धालु गुरुभक्तों ने की। धर्म सभा में उपस्थित प्रायः हर भाई/बहिन ने उपवास व संवत्सरी प्रतिक्रमण किया। खतरगच्छ के श्रावकगण संवत्सरी महापर्व पर व्याख्यान में क्षमापना करने भगवंत की चरण सन्निधि में आये। सरस व्याख्यानी श्रद्धेय श्री महेन्द्र मुनि जी म.सा. ने पूज्य आचार्य भगवंत व संतवृंद की ओर से संवत्सरी सम्बंधी क्षमायाचना की।

पर्वाधिराज पर्युषण पर साधना आराधना व तप त्याग का लक्ष्य लेकर आये हर श्रद्धालु गुरुभक्त ने आठों ही दिन सावद्य प्रवृत्तियों से विलग रहते हुए धर्माराधना में समय व्यतीत कर धन्यता का अनुभव किया। प्रातः राइसी प्रतिक्रमण से लेकर रात्रि दिवसीय प्रतिक्रमण पश्चात् ज्ञान चर्चा का लाभ संत सन्निधि में लेते हुए अधिकतम समय सभी का साधना में रहा। दूरस्थ व समीपस्थ निम्न स्थलों के भाग्यशाली भक्तों

को पावन चरण सन्निधि में ज्ञानाराधना, तपाराधना, धर्माराधना करने का सौभाग्य मिला। दिल्ली, चेन्नई, कोयम्बतूर, कुम्भकोणम, मोगा (पंजाब), कानपुर, हैदराबाद, बैंगलोर, बीजापुर, माधवनगर, वल्लारी, बंगारपेट, रायचूर, मैसूर, बेलगांव, मुम्बई, बार्शी, धुलिया, भड़गांव, जामनेर, लासूर स्टेशन, फत्तेपुर, चित्तूर, पिलखोड़, केलसी, चांदवड़, अहमदाबाद, रतलाम, कलकत्ता, कोटा, अलीगढ़-रामपुरा, चौरू, बजरिया, आदर्शनगर, आलनपुर, हाउसिंग बोर्ड, शहर सवाई माधोपुर, जयपुर, जरखोदा, नदबई, बनावड, मण्डावर, भरतपुर, विजयनगर, जोधपुर, बालोतरा, नीमच, निमाज, जावला, बिलाड़ा, देशनोक, नागौर, भोपालगढ़, पीपाड़ आदि।

साधना में लीन रहकर आत्मीय गुणों को प्रस्फुटित करने वाले परमाराध्य पूज्य गुरुदेव के अतिशय विशेष से आठों ही दिवस समवशरण सम परिदृश्य रहा। सुराणा मार्केट स्थित सामायिक स्वाध्याय भवन, साधना आराधना व संवर के लिये छोटा पड़ गया। यह सब महापुरुषों के विराजने के कारण ही संभव हुआ।

4 सितम्बर को परस्पर क्षमापना करने के प्रसंग के कारण प्रवचन स्थगित रखा गया। तपस्वी साधक सुश्रावक श्री मनसुख लाल जी मेवाड़ा हाउसिंग बोर्ड, पाली ने 31 दिवसीय तपस्या के प्रत्याख्यान पूज्य अचार्यप्रवर के पावन श्रीमुख से लिये। ज्ञानगच्छीय संत श्रद्धेय श्री नरेन्द्र मुनिजी म.सा., श्रद्धेय श्री इन्द्रेश मुनि जी म.सा., श्रद्धेय श्री शांतमुनि जी म.सा., संवत्सरी सम्बन्धी क्षमापना करने पधारें। रूई का कटला व शाह जी का चौक के श्रावकगण भी क्षमापना करने गुरुदेव की चरण सन्निधि में आये।

5 सितम्बर को हैदराबाद से मलकाज गिरी संघ, दक्षिण में विचरणरत महासतियां जी म.सा. के चातुर्मास की विनती लेकर उपस्थित हुआ। आज ही नवदीक्षित संत श्रद्धेय श्री गुणवंत मुनिजी म.सा. ने 11 दिवसीय तपस्या के पूज्य गुरुदेव के श्रीमुख से प्रत्याख्यान लेकर तपस्या का अर्घ्य भगवन् के चरण सरोजों में अर्पित कर अन्तर्निहित भावना को साकार किया। 6 सितम्बर को हरियाढाणा से संकलेचा परिवार की धर्मपरायण सुश्राविका श्रीमती इन्द्राजी-राजेन्द्र जी संकलेचा ने 11 दिवसीय तप के प्रत्याख्यान अपने आराध्य के पावन मुखारविन्द से लिये। श्री राजेन्द्रजी, रमेशचन्दजी संकलेचा बन्धु अच्छे सेवाभावी श्रावक हैं। 7 सितम्बर को अजमेर संघ के भाई/बहिन संवत्सरी सम्बंधी क्षमायाचना करने पूज्य ज्ञान महोदधि की सेवा में आये। 8 सितम्बर को कोटा एवं जोधपुर से वृहद संघ क्षमापना के साथ चातुर्मास की विनती लेकर तथा गोटन, नागौर, ब्यावर, बालोतरा, सूरत, जयपुर व सवाई माधोपुर से भी संघ आत्मलक्षी आराध्य देव की चरण सन्निधि में क्षमापना व क्षेत्र फरसकर उपकृत करने की भावना से उपस्थित हुए। आज सुख विपाक सूत्र की वाचना सम्पूर्ण हुई। 9 सितम्बर से दोपहर समय निरयावलिया सूत्र की वाचना प्रारम्भ हुई। 10 सितम्बर को किशनगढ संघ आगामी चातुर्मास की भावना से परमोपकारी पूज्य गुरुदेव की सेवा में आया। अलीगढ़ रामपुरा संघ भी क्षमापना की भावना से कल्याणकारी पूज्य प्रवर की चरण सन्निधि में उपस्थित हुआ। संघ संरक्षक मण्डल के सम्मानित सदस्य श्री कैलाशचंद जी हीरावत,

श्री सुमेरसिंह जी बोथरा क्षमापना करने संघनायक की सेवा में आये।

12 को पोरवाल क्षेत्र सवाई माधोपुर से कृशकाय के बावजूद भी हर वर्ष की तरह मासक्षमणोपरान्त तप की आराधना में निरन्तर वृद्धि करने वाले तपस्वी श्रावक रत्न श्री मोहनलाल जी जैन सुपुत्र श्री मोतीलाल जी जैन एण्डवा वालों ने 51 दिवसीय तपस्या के प्रत्याख्यान पूज्य आचार्य भगवंत के पावन मुखारविन्द से लिये। भाई श्री मोहनलाल जी ने उग्र तपस्या में भी बिना किसी प्रकार की सेवा लिये समस्त धार्मिक गतिविधियों के समय उपस्थित रहते हुए सावद्य प्रवृत्तियों से विलग रहते हुए पौषध के साथ तप आराधना का लक्ष्य भगवन् के चरणों में ही सम्पन्न करने की भावना को सफलीभूत किया। 13 सितम्बर को तपस्या में हर वर्ष पुरुषार्थ करने वाले सुश्रावक श्री महावीर प्रसाद जी जैन, स्व. श्री रामकिशोर जी जैन, ग्राम बनावड़ (मण्डावर) ने पूज्य आचार्य भगवन् की चरण सन्निधि में आकर 31 दिवसीय मासखमण तप की आराधना अहोभाव से की। रघुनाथ स्मृति भवन में विराजित महासती देशनाश्रीजी एवं चरमश्रीजी आदि ठाणा संवत्सरी सम्बंधी क्षमापना करने पूज्य गुरुवर की सेवा में पधारी। हैदराबाद संघ, बीजापुर संघ ने प्रवचन श्रवण, दर्शन-वंदन का लाभ लेते हुए संवत्सरी सम्बंधी क्षमापना की। 14 सितम्बर को युवक परिषद् के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री राजकुमारजी गुलेच्छा सुपुत्र श्री लाभचंद जी गुलेच्छा पाली वालों ने भौतिक संसाधनों के साथ शरीर-स्वास्थ्य से आसक्ति हटाते हुए उग्र तपस्या का अर्ध्य पूज्य आचार्य भगवन् के चातुर्मास मे अर्पित करने की भावना से 30 दिवसीय मासखमण की आराधना कर श्रद्धा भक्ति का परिचय दिया। जयपुर से पाच्यावाला संघ व आध्यात्मिक शिक्षण संस्थान में अध्ययनरत पूर्व छात्रों का परिवार श्री गौतमचंद जी जैन सेवानिवृत्त राज्य सरकार के प्रशासनिक अधिकारी के संयोजन में दर्शन-वन्दन करने की भावना से आसन्न उपकारी पूज्य गुरुदेव की सेवा में आये। पूज्य प्रवर ने सेवानिवृत्त हुए प्रबुद्धों को समय दान के साथ सेवा देने की प्रेरणा की। पूर्णिमा का प्रसंग होने से विजयनगर, जयपुर, हिण्डौन, सैलाना से पूनिया श्रावकगण भगवन् की चरण सन्निधि में साधना-आराधना करने आये।

15 सितमबर को रविवारीय प्रसंग होने से क्षमापना करने मुम्बई से वृहद् संघ, भोपालगढ़ से वृहद संघ मण्डावर संघ धनारीकलां संघ, निफाड़ संघ के अतिरिक्त जयपुर-जोधपुर-सवाई माधोपुर, अलीगढ़, रामपुरा, बैंगलोर, चेन्नई, जोबनेर, ब्यावर, नवसारी, पीपाड़, कुण्डेरा, पीपलगांव, बसवन्त, नासिक, सोरापुर, बीकानेर, आदि स्थानों से गुरुभक्त प्रशांत विभूति पूज्य गुरुदेव की सेवा में सांवत्सरिक क्षमापना करने आयें। भोपालगढ संघ ने दीक्षा व अक्षय तृतीया प्रसंग की विनति पावन श्री चरणों में रखी। 16 सितम्बर को पाचोरा संघ वाले चातुर्मास की विनती लेकर आये। जिनवाणी के प्रधान सम्पादक डॉ धर्मचंद जी ने विगत वर्ष में हुई भूलों की क्षमापना की। 17 सितम्बर को बैंगलोर संघ, देई संघ, आदिलाबाद (हैदराबाद) संघ 18 सितम्बर को बारणी नाडसर संघ तथा जैन युवा संगठन के पदाधिकारी व कार्यकर्तागण , वैशाली नगर अजमेर संघ, जामोला संघ सांवत्सरिक क्षमापना करने आये। बारणी से बहिन श्रीमती गुल्लुबाई जी प्रजापत ने चौले की तपस्या के प्रत्याख्यान लिये। 19

सितम्बर को सवाईमाधोपुर से बजरिया संघ, मध्यप्रदेश से सैंधवा संघ आत्मलक्षी पूज्य गुरुदेव की सेवा में उपस्थित हुए। 20 सितम्बर को चेन्नई से वृहद संघ दो दिवसीय सन्निधि की भावना से तथा पल्लीवाल क्षेत्र से हिण्डौन संघ, गोपालगढ़ संघ, खौह संघ क्षमापना की भावना से पूज्यश्री की सन्निधि मे आये। 21 सितम्बर को जयपुर से प्रतापनगर संघ का ज्योतिपुंज पूज्य प्रवर की सेवा में दर्शनार्थ आना हुआ। प्रतापनगर संघ ने दीक्षा प्रसंग का लाभ प्रदान करने की विनती पावन चरणों में रखी। प्रतापनगर संघ के साथ आई बहिन सुश्री मोनिका जी सुपुत्री श्री टीकमचंद जी जैन, महुवा (सिद्धान्तशाला में अध्ययनरत) एवं सुश्री शानूजी सुपुत्री श्री विजेन्द्र जी जैन फाजिलाबाद ने परमाराध्य आचार्य प्रवर के चरणो में 1008 बार सविधि वन्दन कर भक्ति का आदर्श रखा। 22 सितम्बर को जयपुर से मानसरोवर संघ, जवाहर नगर संघ ने पूज्य प्रवर की चरण सन्निधि एवं दर्शन वन्दन-प्रवचन-श्रवण का लाभ लिया। वल्लभ नगर संघ, जयपुर ने भी दर्शन-सेवा कर धन्यता का अनुभव किया।

परम श्रद्धेय पूज्य आचार्य भगवन्त स्वास्थ्य समाधि के साथ अपनी साधना-आराधना में अधिकांश समय का नियोजन कर रहे हैं। नियमित प्रवचन की श्रृंखला में शुक्ल पक्ष में श्रद्धेय श्री रवीन्द्रमुनि जी म.सा. ने जैन धर्म के मौलिक इतिहास का आधार लेते हुए वीर संवत् 1 से लेकर 2000 तक के मध्य हुए आचार्यो, वाचनाचार्यो, क्रियोद्धारकों का जैन जगत व शासन की प्रभावकता व उनकी अनमोल कृतियों पर सारगर्भित साक्षात्कार करवाया। वर्तमान समय कृष्ण पक्ष से श्रद्धेय श्री योगेश मुनि जी म.सा. तीर्थकर गौत्र अर्जन के 20 बोलों की आराधना के संदर्भ में विविध पक्षों से व्याख्या कर भगवान बनने का मार्ग बता रहे हैं। सरस व्याख्यानी श्रद्धेय श्री महेन्द्र मुनि जी म.सा. का उपासकदशा सूत्र से आनन्द श्रावक के भगवान महावीर की सेवा में जाने से लेकर आगे की श्रावकत्व धर्म आगार धर्म ग्रहण कर दृढ़ता से पालन वाली भावना पर विवेचन चल रहा है। दर्शन-वन्दन-प्रवचन-श्रवण-क्षमापना आदि की भावना से श्रद्धालु गुरुभक्तों का संघ रूप में, समूह रूप में आने का क्रम पूज्य आचार्य भगवंत की सेवा में बराबर बना हुआ है। पोरवाल क्षेत्र से रोजाना अच्छी संख्या में दर्शनार्थी अनवरत आ रहे हैं।

27 सितम्बर को निमाज निवासी वीर पिता श्री कुशलराजजी कोठारी के समाधिमरण पर श्री पदमचन्दजी, महावीरचन्दजी कोठारी परिवार जनों के साथ मांगलिक श्रवण करने पूज्य आचार्य भगवन्त की चरण सन्निधि में आये। श्री कुशल राजजी के सांसारिक पुत्र रत्न, रत्नसंघ में दीक्षित होकर वर्तमान में श्रद्धेय श्री जितेन्द्र मुनिजी म.सा. के रूप में जिनशासन की महती प्रभावना कर रहे हैं। भीलवाड़ा संघ शेष काल फरसने की विनति लेकर परमाराध्य पूज्यप्रवर की सेवा में उपस्थित हुआ।

28 व 29 सितम्बर को राष्ट्रीय स्तर पर होने वाले कार्यक्रम पाली में पूज्य आचार्यप्रवर की पावन चरण सन्निधि में सम्पन्न हुए। पूज्य गुरुदेव दोनों ही दिवस प्रवचन सभा में पधारे एवं अमृतमय प्रवचनामृत फरमाने की कृपा की। इस प्रसंग पर

न्यायमूर्ति श्री प्रकाशचन्दजी टाटिया एवं अन्य पदाधिकारीगण, कार्यकारिणी के सदस्य व सम्मानित अतिथिगण पुण्य धरा पाली में आये एवं पूज्य आचार्य भगवंत के दर्शन-वंदन-सेवा सन्निधि का लाभ लिया। 28 सितम्बर को अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् का राष्ट्रीय अधिवेशन, श्रेष्ठ शाखाओं का सम्मान एवं 29 सितम्बर को अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ द्वारा गुणीजनों के सम्मान का कार्यक्रम छात्रावास परिसर में रखा गया। ''संघ रत्न'' के सम्मान से पूर्व न्यायाधिपति श्री जसराजजी चौपड़ा-जयपुर को विभूषित किया गया। 29 को अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ व अधीनस्थ समस्त संस्थाओं की आम सभा हुई। जिसमें विगत वर्ष के कार्यो की रिपोर्ट सदन के समक्ष अनुमोदार्थ एवं पारित के लिये प्रस्तुत की। पाली संघ की व्यवस्था बहुत ही अच्छी रही।

श्री भागचन्दजी मेहता जोधपुर वालों ने चातुर्मास अवधि में सेवा का लाभ लेते हुए संवर-आराधना करते हुए 29 को आचार्य भगवन्त में निहित गुणों के समकक्ष 36 दिवसीय तपस्या का अर्ध्य पूज्य भगवन्त के चरणों में अर्पित किया। आपने पौषध सहित व्याख्यान वाणी आगम वाचनी के समय उपस्थित रहते हुए उग्र तप की आराधना की, वह अनुमोदनीय है।

01-02 अक्टूबर को पूज्य आचार्य भगवन्त की पावन सन्निधि में दो दिवसीय विद्वत् संगोष्ठी हुई। संगोष्ठी के संयोजक डॉ. धर्मचन्दजी जैन के अनुसार लगभग 20 विद्वानों ने दान के महात्म्य व फल पर सारगर्भित आख्यानों की प्रस्तुति दी। नदबई व जामोला संघ प्रशांत विभूति पूज्य श्री की चरण सन्निधि में दर्शनार्थ उपस्थित हुआ।

02 से 06 अक्टूबर को श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर द्वारा स्वाध्यायी अभिवर्धन शिविर का आयोजन किया गया, जिसमें 70 स्वाध्यायियों की उपस्थिति रही। 05 अक्टूबर को प्रतापनगर संघ-जयपुर आयोज्य दीक्षा प्रसंग का लाभ लेने की भावना से विनति लेकर आत्मलक्षी संयम प्रदाता पूज्यपाद की सेवा में उपस्थित हुआ। सेलम व भिवण्डी संघ आगामी चातुर्मास के लिये अपने भाव पूज्यश्री के चरणों में निवेदन करने आये। 06 अक्टूबर को अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर द्वारा आयोजित कार्यशाला में 125 केन्द्राधिक्षकों व निरीक्षकों की सहभागिता रही। 08 अक्टूबर को विजयनगर निवासी श्री नरेन्द्रजी बिराणी के स्वर्गवास पर परिवारजन मांगलिक श्रवण करने पूज्य आराध्य श्री के चरणों में आये। 10 अक्टूबर को नवदीक्षित श्रद्धेय श्री दीपेशमुनिजी म.सा. ने पचोले की तपस्या के प्रत्याख्यान परमोपकारी पूज्य गुरुदेव के पावन मुखारविन्द से लिये। 11 को रायचूर (कर्नाटक) से संघ सेवी श्री रीखबचन्दजी सुखानी के समाधिमरण पर समर्पित श्रावक रत्न श्री पारसमलजी सुखानी पूज्य आचार्यश्री के श्रीमुख से मांगलिक श्रवण करने परिवारजनों के साथ आये। शासन सेवा समिति के सदस्य श्री गौतमचन्दजी हुण्डीवाल हर माह की तरह इस माह भी त्रिदिवसीय चरण सन्निधि का लाभ लेने की भावना से गुरु भगवन् की सेवा में रहे। 12 अक्टूबर को शिरपुर संघ

ज्ञान महोदधि पूज्य श्री गुरुदेव के दर्शनार्थ उपस्थित हुआ। 13 अक्टूबर को पूर्णिमा का प्रसंग होने से विजयनगर, हिण्डौन, जयपुर, सेलाना, बैंगलोर में पूनमियां श्रावक बन्धु दर्शन व साधना-आराधना करने करुणा निधान पूज्य गुरुवर्य की छत्रछाया में आये। संरक्षक मण्डल के सम्मानित सदस्य श्री सुमेरसिंहजी बोथरा-जयपुर ने सेवा सन्निधि का लाभ लिया। 14 अक्टूबर को खेरलीगंज संघ, उपकारी पूज्य गुरुदेव की सेवा में कृतज्ञता वाले भाव निवेदन करने उपस्थित हुआ। 15 अक्टूबर को जयपुर से संरक्षक मण्डल के सम्मानित सदस्य श्री विमलचन्दजी डागा एवं लालभवन संघ के पदाधिकारी गण आगामी चातुर्मास की विनति लेकर पावन श्री चरणों में आये। 17 अक्टूबर को देव, गुरु, धर्म के प्रति आस्थावान श्राविका श्रीमती बिन्दुजी-जोधपुर ने पाली वर्षावास का लाभ लेते हुए संकल्प के साथ चातुर्मास में 101 दिवसीय एकासन की आराधना भगवन् के चरणों में सम्पन्न की। 20 अक्टूबर को सोजत रोड़ संघ शेषकाल फरसने की व बिल्लीपुरम् संघ चातुर्मास की विनति लेकर दयासिंधु की सन्निधि में आया। 21 अक्टूबर को हरसाना संघ वाले पूज्य गुरुदेव के दर्शन-वंदन-प्रवचन श्रवण की भावना से आये। 22 अक्टूबर को सुश्रावक श्री छतरचन्दजी मेहता के समाधिमरण पर श्री अरुणजी मेहता परिजनों के साथ मांगलिक श्रवण करने पूज्य भगवन् की सेवा में उपस्थित हुए। 23 अक्टूबर को श्री महावीरप्रसादजी जैन-बनावड़ वालों ने 21 की तपस्या के प्रत्याख्यान पावन श्रीमुख से लिये। दर्शन-वंदन हेतु श्रद्धालु गुरुभक्तों के आने का क्रम अनवरत बना हुआ है। पाली संघ आगतों की सेवा के लिए अहर्निश उद्यत है। सबकी आतिथ्य सत्कार वाली भावना प्रमोदजन्य है।

शासन सेवा समिति के सदस्य श्री नौरतमलजी मेहता-जोधपुर से एवं श्री हस्तीमलजी गोलेच्छा-ब्यावर से सप्ताह में एक-दो बार गुरु चरणों में आने की भावना को मूर्तरूप दे रहे हैं। भगवान महावीर निर्वाण कल्याणक के अवसर पर उत्तराध्ययन सूत्र का वाचन किया गया, इस अवसर पर अनेक श्रावक-श्राविकाओं ने उपवास, बेले एवं तेले की तपस्या की।

वर्षावास में वीर पुत्र श्री रिखबचन्दजी सिंघवी, वीरपिता श्री घनश्यामलालजी जैन-कोटा, श्री राजेशजी लोढ़ा, श्री धर्मेशजी रेड़, श्री श्रीचंदजी हींगड़, श्री पंकजजी लोढ़ा ने संवर आराधना की। श्री उगमराजजी कांकरिया-चेन्नई वाले चातुर्मास में सेवा का लाभ लेते हुए संवर साधना कर रहे हैं। गौचरी के समय श्री श्रीचंदजी हींगड़, श्री कमलेशजी संचेती, श्री जितेन्द्रजी चौपड़ा, श्री विनीतजी मेहता की अहर्निश सेवाएँ रहीं। संघाध्यक्ष श्री छगनलालजी लोढ़ा अपना पर्याप्त समय प्रबंधन व सेवा में दे रहे हैं। सभी संघ सदस्यों का चातुर्मास में सुन्दर योगदान रहा।-जगदीश जैन

उपाध्यायप्रवर की पावन प्रेरणा से अपूर्व धर्माराधना

जोधपुर संघ के अहोभाग्य से एवं आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के कृपा प्रसाद से लम्बे समय से पूज्य उपाध्याय भगवन्त आदि ठाणा शक्तिनगर गली नं. 6, जोधपुर विराजमान हैं। सन्तों के आचार-विचार-चर्या एवं संयमी जीवन के व्यवहार

को देखकर लगता ही नहीं कि भगवन्त लम्बे समय से विराजमान हैं। यही कारण है कि लोगों के मन में गुरु भगवन्त के प्रति दर्शनोत्सुकता एवं प्रवचन श्रवण की रुचि नियमित बनी रहती है। हर धर्म क्रिया में यहाँ का माहौल प्रसंशनीय एवं अनुकरणीय बना हुआ है। जब से चातुर्मास प्रारम्भ हुआ प्रत्येक रविवार को अलग-अलग विषयों पर सन्तों के मार्मिक उद्‌बोधन होते और क्या युवा, क्या बुजुर्ग, क्या बच्चे हर उम्र के व्यक्ति उत्साह से भाग लेते और देखते ही देखते पर्युषण पर्व भी नजदीक आ गये। लोगों का उत्साह पूरे जोश में था। तपस्या के क्रम में श्रावण-भाद्रपद दो महीने एकान्तर तप करने वालों की लम्बी सूची रही तो अठाई तप करने वाले भी एक-एक करते हुए अनेक भाई-बहिन जुड़ते गये। कई भाई-बहिनों ने तो पहली बार अठाई तप करके परम प्रसन्नता का अनुभव किया। दो बहिनों ने श्रीमती सीमाजी टाटिया धर्मसहायिका श्री उमेशजी टाटिया और श्रीमती मधुजी तातेड़ ने सिद्धि तप जैसी कठिन तपश्चर्या भी बड़े उल्लास भाव से की तो कुछ बहिनों ने राजा परदेशी के बेले-बेले पारणा तप की आराधना कर शासन की अपूर्व आराधना की। पर्युषण पर्व के दौरान संयम दिवस के दिन भिक्षु दया का आयोजन किया गया, जिसमें 20 युवाओं ने भाग लिया। श्रीमती सुशीलाजी चौपड़ा ने 29 के प्रत्याख्यान किए।

बहिनों का जोश बुलन्दियों को छू रहा था, यही कारण था कि ग्यारह, पन्द्रह, इक्कीस की तपस्या के साथ श्रीमती मंजूजी भण्डारी ने मासक्षपण की तपश्चर्या सम्पन्न की। पर्वाधिराज पर्युषण के उपलक्ष्य में सम्पूर्ण जोधपुर संघ को 500 तेले का आह्‌वान किया, जिसमें शक्तिनगर क्षेत्र में 300 के लगभग तेले हुए और नेहरु पार्क, सरस्वतीनगर एवं अन्य सभी क्षेत्रों को मिलाकर 500 से अधिक तेले के तप का आराधन कर जोधपुर संघ ने अटूट गुरुभक्ति का परिचय दिया तो साथ ही पर्युषण में चारों तरफ अठाई तप का एक अलग ही नजारा देखने को मिला।

25 अगस्त को युवक परिषद् द्वारा आयोजित मासिक सामूहिक सामायिक का आयोजन शक्तिनगर में हुआ, जिसमें अच्छी संख्या में युवाओं ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। लोगों में प्रवचन सुनने की जो उत्सुकता पर्व के दिनों में देखने को मिली वह अपने आपमें एक मिशाल के रूप में नजर आई। पूरा परिवार का परिवार एक साथ प्रवचन में उपस्थिति दर्ज कर संघ सदस्यों ने अनन्त धर्मश्रद्धा का परिचय दिया और मधुरव्याख्यानी श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा., श्रद्धेय श्री जितेन्द्रमुनिजी म.सा., श्रद्धेय श्री अभयमुनि जी म.सा. ने प्रत्येक दिन नित्य नये विषयों पर प्रेरणास्पद प्रवचन फरमाया जैसे जलता समंदर तिरती नाव, ये बगियां फूलों वाली है, धर्म जिया तो डरना क्या आदि विषयों पर मार्मिक प्रवचन फरमाये तथा प्रतिदिन श्रद्धेय श्री अविनाशमुनिजी म.सा. ने अन्तगडदशा सूत्र का सुन्दर शैली में विवेचन किया। प्रवचन सभा का कुशल संचालन युवा अध्यक्ष श्री गजेन्द्रजी चौपड़ा द्वारा प्रवचन के आधार पर काव्य रचना द्वारा किया जा रहा है। किशोरवर्ग एवं युवा वर्ग ने आश्रव से संवर में रहने के लिए सामायिक दया-संवर एवं पौषध व्रत की बढ़-चढ़कर आराधना की। मध्याह्न में भी युवावर्ग ने संतों के साथ बैठकर अपनी जिज्ञासाओं का समाधान पाकर अनेक

ज्ञानवर्द्धन बातें श्रवण की। प्रतिदिन दोपहर विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन श्राविका संघ की मंत्री श्रीमती काजलजी जैन एवं युवा अध्यक्ष श्री गजेन्द्रजी चौपड़ा द्वारा करवाई गई, विजेताओं को पुरस्कार प्रदान किया गया।

संवत्सरी महापर्व का तो एक अलग ही सैलाब देखने को मिला। 18 से 35 वर्ष के युवा वर्ग ने 150 से अधिक एवं उसके अतिरिक्त अन्य अवस्था के बहुत से श्रावकों ने पौषध व्रत की आराधना की। पर्व की पूर्णाहुति के बाद भी स्थानीय लोगों का प्रवचन आदि में उत्साह बना हुआ है। परम पूज्य उपाध्यायप्रवर के स्वास्थ्य में समाधि है। भगवान महावीर निर्वाण-कल्याणक के अवसर पर उपाध्यायप्रवर ने 86 वर्ष की उम्र में तेले की तपस्या कर उत्कृष्ट पुरुषार्थ का परिचय दिया है। इस अवसर पर उत्तराध्ययन सूत्र का तीन दिन वाचन किया गया। अनेक श्रावक-श्राविकाओं ने विभिन्न तपस्याओं की आराधना की। प्रत्येक रविवार को युवाओं के लिए अलग-अलग विषयों पर प्रवचन हो रहे है। दर्शनार्थियों का आवागमन बड़ी संख्या में बना हुआ हैं और दर्शनार्थी बन्धु प्रत्येक धार्मिक क्रियाओं में गुरु भगवन्त की सेवा में लाभ ले रहे हैं। स्थानीय संघ आतिथ्य सत्कार का समुचित लाभ ले रहा है। क्षेत्रीय संयोजक अशोक जी कोचर- मेहता एवं उनकी टीम पूरी सेवा भावना से आतिथ्य सत्कार में तत्पर रहते हैं।-लाडेशजी रांका, चातुर्मास संयोजक

सन्त–मुनिराजों की प्रेरणा से चमका मणिनगर चातुर्मास

आगमज्ञ, प्रवचन प्रभाकर, व्यसनमुक्ति के प्रबल प्रेरक, जिनशासन गौरव परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर 1008 श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के आज्ञानुवर्ती सेवाभावी श्रद्धेय श्री नन्दीषेणमुनिजी म.सा., श्रद्धेय श्री मनीषमुनिजी म.सा. आदि ठाणा 4 के पावन सान्निध्य में मणिनगर-अहमदाबाद चातुर्मास प्रगति की ओर बढ़ रहा है।

चातुर्मास के अन्तर्गत प्रतिदिन संतवृन्दों के मुखारविन्द से निकली जिनवाणी का रसपान करने के इच्छुक श्रावक-श्राविकाओं से स्थानक भवन खचाखच भर जाता है। विशाल जनमेदिनी को देखकर तीर्थंकर प्रभु के समवशरण सा नज़ारा परिलक्षित होता है। संत रत्नों के निर्मल संयम के प्रताप से चातुर्मास में अनेकानेक गतिविधियाँ क्रियान्वित हो रही है, इसमें ज्ञानाराधना के क्षेत्र में तत्त्वार्थ सूत्र की कक्षा चातुर्मास से लेकर अब तक गतिमान है। इस कक्षा का सुपरिणाम रहा कि लगभग 20 श्रावक-श्राविकाओं द्वारा ज्ञानार्जन किया जा रहा है।

चारित्र के क्षेत्र में प्रतिदिन श्रावकों द्वारा रात्रिकालीन संवर की आराधना की जा रही है तथा साथ ही अनेक श्रावक-श्राविकाओं द्वारा 12 व्रतों का स्वरूप समझकर तथा उनको ग्रहण कर जिनशासन की प्रभावना में अभिवृद्धि की जा रही है।

तप के क्षेत्र में उपवास, आयम्बिल, एकासन, नींवी, तेला, अठाई की लड़ी निरन्तर गतिमान है। इसके अतिरिक्त चातुर्मास की उपलब्धि के रूप में अब तक 400 तेले, 1 चोला, 11 पचोले, 2 सात की तपस्या, 55 अठाई, 14 नौ की तपस्या, 3 ग्यारह की तपस्या, 1 पन्द्रह की तपस्या चल रही है।

वीरमाता श्रीमती कान्ता जी जागीरदार द्वारा सात-आठ कर्म-तप, श्री

प्रसन्नराजजी श्रीश्रीमाल द्वारा चातुर्मास प्रारम्भ से लेकर एकासन, उपवास का तप अनवरत गतिमान है। श्रीमती संतोषजी श्रीश्रीमाल द्वारा एकान्तर की तपस्या, वर्षीतप आदि अनेकानेक तपों की शृंखला गतिमान है।

पर्युषण पर्व के पावन प्रसंग पर सन्तरत्नों द्वारा विशेष प्रवचन, अष्ट दिवसीय नवकार महामंत्र का जाप, चातुर्मास प्रारम्भ से अब तक प्रतिदिन दोपहर 2 से 3 बजे तक श्राविकाओं द्वारा जाप आदि अनेकानेक कार्यक्रम क्रियान्वित किए जा रहे हैं। पूर्व में दशाश्रुतस्कन्ध की वाचनी के पूर्ण होने से वर्तमान में बृहत्कल्प सूत्र की वाचनी प्रारम्भ करने के भाव है। रात्रिकालीन युवाशाला 8.30 से 10 बजे तक अनवरत चलायमान है। प्रत्येक शनिवार को श्रद्धेय श्री मनीषमुनिजी म.सा. द्वारा विशिष्ट विषय पर कक्षा ली जा रही है। पर्वाधिराज पर्युषण महापर्व के प्रतिदिन होने वाले कार्यक्रमों के अन्तर्गत रात्रिक प्रतिक्रमण, प्रार्थना, अंतगडदशासूत्र का वाचन/विवेचन, प्रवचन, प्रतियोगिता, कल्पसूत्र वाचन, श्रावक के बारह व्रतों की कक्षा, सायंकालीन प्रतिक्रमण व रात्रि को युवाशाला व ज्ञानचर्चा आदि कार्य सम्पन्न हुए। 03 से 27 अक्टूबर तक प्रवचन में श्रद्धेय श्री मनीषमुनिजी म.सा. द्वारा उत्तराध्ययन सूत्र का विवेचन किया गया तथा 19 से 26 अक्टूबर तक प्रातः 8.30 से 9.00 बजे तक वीर स्तुति (पुच्छिसुणं) का 9 दिनों तक स्वाध्याय करवाया गया। 26-27-28 अक्टूबर भगवान महावीर निर्वाण कल्याणक अवसर पर उत्तराध्ययन सूत्र वाचन के साथ अनेक श्रावक-श्राविकाओं ने उपवास, बेले, तेले की आराधना की। -निहालचन्द लोढ़ा, मंत्री

श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनिजी म.सा. की प्रेरणा से अपूर्व धर्माराधना

जिनशासन गौरव परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर 1008 श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के आज्ञानुवर्ती तत्त्वचिन्तक श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनिजी म.सा., श्रद्धेय श्री यशवन्तमुनिजी म. सा. आदि ठाणा 6 के पावन सान्निध्य में सामायिक-स्वाध्याय भवन, नेहरुपार्क चातुर्मास में सामायिक-स्वाध्याय एवं निरन्तर धर्माराधना के साथ अनेकों कार्यक्रम सम्पन्न हुए। पर्युषण के दौरान आठों ही दिन प्रातःकालीन प्रार्थना, अन्तगडसूत्र वाचन, प्रवचन, दोपहर को कल्पसूत्र वाचन, सायंकालीन प्रतिक्रमण एवं रात्रिकालीन संवर की अच्छी आराधना हुई। पर्युषण पर्व में एकाशन, उपवास, बेले, तेले, की तपस्याओं के साथ अठाइयों के प्रत्याख्यान हुए। पर्युषण पर्व के दौरान सिद्धपद आराधना का कार्यक्रम रखा गया, जिसमें लगभग 125 श्रावक-श्राविकाओं ने भाग लिया।

08 सितम्बर, 2019 को पारिवारिक सामूहिक सामायिक का आयोजन रखा गया, जिसमें लगभग 200 की उपस्थिति रहीं। इस अवसर पर श्रद्धेय श्री अशोकमुनिजी म.सा. ने "My God" विषय पर सारगर्भित विवेचन प्रस्तुत किया। इसी दिन श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जोधपुर के लगभग 180 श्रावक-श्राविका संघनायक के दर्शनार्थ पाली पधारे। जोधपुर संघ की विनति प्रस्तुत करते हुए गुरुदेव सहित सभी मुनि भगवन्तों से क्षमायाचना की। दिनांक 12 सितम्बर को तीन विगय के त्याग का कार्यक्रम रखा गया, जिसमें अनेक श्रावक-श्राविकाओं ने उत्साहपूर्वक भाग

लिया। नेहरुपार्क भोजनशाला में भी भोजन में दो ही विगय का प्रयोग किया गया। 14 सितम्बर को श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल, जोधपुर की वार्षिक संगोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसमें लगभग 400 श्राविकाओं ने भाग लिया। 15 सितम्बर को पारिवारिक सामूहिक सामायिक का आयोजन किया गया, जिसमें लगभग 200 श्रावक-श्राविकाओं की उपस्थिति रहीं। 16 सितम्बर को मुम्बई संघ दर्शनार्थ उपस्थित हुआ। दिनांक 17 सितम्बर को श्राविका रत्न श्रीमती संतोषजी डोसी धर्मसहायिका श्री बहादुरमलजी डोसी ने 61 की तपस्या के प्रत्याख्यान किए। जोधपुर संघ द्वारा भोपागलगढ़ बकराशाला को ढाई लाख एवं धर्मपुरा बकराशाला जोधपुर को तीन लाख रुपये जीवदया के तहत चारे की व्यवस्था के लिए उपलब्ध कराये गये। दिनांक 22-23 सितम्बर को चेन्नई संघ दर्शनार्थ उपस्थित हुआ। प्रत्येक रविवार को युवाओं के लिए विशेष कक्षा का आयोजन किया जा रहा है, जिसमें श्रद्धेय श्री अशोकमुनिजी म.सा. विविध विषयों पर सारगर्भित प्रवचन फरमा रहे हैं। भगवान महावीर निर्वाण कल्याणक के अवसर पर उत्तराध्ययन सूत्र का वाचन हुआ। अनेक श्रावक-श्राविकाओं ने तपाराधना की। दिनांक 26 अक्टूबर, 2019 को नेहरुपार्क प्रवचन सभा में प्रवचन के पश्चात् रत्नसंघ के श्रावकरत्न श्री मोहनराजजी चाम्बड़-जोधपुर-बैंगलोर के संथारे समाधिसहित देवलोकगमन होने पर उनके गुणानुवाद करने के साथ दो लोगस्स का ध्यान कर, श्रद्धा-सुमन अर्पित किये गये। दर्शनार्थियों का आवागमन निरन्तर जारी हैं, जोधपुर संघ आगन्तुक महानुभावों की सेवा का तत्परता से लाभ ले रहा है। क्षेत्रीय संयोजक श्री प्रकाशजी चौपड़ा एवं उनकी टीम पूरी सेवा भावना से आतिथ्य-सत्कार में तत्पर रहते हैं।-राजेश चोरड़िया

महासतीवृन्दों के चातुर्मासों में अपूर्व धर्माराधना का ठाट

प्रतापनगर, जयपुर– साध्वीप्रमुखा विदुषी महासती श्री तेजकंवरजी म.सा. आदि ठाणा 8 का गुलाबीनगर, जयपुर के प्रतापनगर स्थित श्री श्वेताम्बर जैन रत्न स्वाध्याय भवन में चातुर्मास उत्साहपूर्वक चल रहा है। पर्वाधिराज पर्व पर्युषण में अष्ट दिवसीय 'सिद्धपद आराधना' सम्पन्न हुई, जिसमें लगभग 72 साधकों ने साधना-आराधना की। साधना की समयावधि प्रातः 8 से मध्याह्न 3 बजे तक थी। गुरुवर्याश्री ने पर्वाधिराज पर्व पर्युषण में 108 तेले की भावना व्यक्त की थी, किन्तु गुरु भगवन्त की अनन्य कृपा से लगभग 135 से अधिक तेले सम्पन्न हो चुके हैं। अन्य तपस्याओं में मासखमण 1, पन्द्रह की तपस्या 1, ग्यारह की तपस्या 4, नौ की तपस्या 8, अठाई 9, पचोले 4, चोले 5, बेले की तपस्या 9 सम्पन्न हो चुकी है। इस बार पर्युषण में उपवास आदि से लेकर बड़ी तपस्या करने वाले लगभग सभी साधकों ने पौषध सहित तपस्या सम्पन्न की। एक बहन ने 19 की तपस्या के प्रत्याख्यान लिए। यथा शक्ति उनकी आगे बढ़ने की भावना है। पर्वाधिराज पर्व पर्युषण दिवस में छह साधकों ने आजीवन शीलव्रत के प्रत्याख्यान ग्रहण किये-1. श्री अजितजी-श्रीमती अर्चनाजी सुकलेचा 2. श्री ओमप्रकाशजी-श्रीमती चम्पाजी जैन, 3. श्री सुरेशचन्दजी-श्रीमती मधुजी जैन, 4. श्री कपूरचन्दजी-श्रीमती विमलाजी जैन, 5. श्री सुरेशजी-श्रीमती राजाबाईजी जैन, 6.

श्री अमरचन्दजी-श्रीमती शकुन्तलाजी पालेचा और 7. श्री रूपचन्दजी-श्रीमती बीनाबाईजी जैन। इसके अतिरिक्त एक-एक वर्ष के शीलव्रत के प्रत्याख्यान भी अनेक हुए। पर्युषण के आठों दिवस में 24 घण्टे अखण्ड नवकार मन्त्र के जाप की साधना सम्पन्न हुई। प्रत्येक रविवार को 'इतिहास के चमकते सितारे, बने भव्यों के सहारे' प्रतियोगिता निरन्तर चल रही है।-सुशील जैन, मन्त्री

वैशाली नगर, अजमेर– विदुषी महासती श्री सुशीलाकंवरजी म.सा. आदि ठाणा 8 का वैशाली नगर, अजमेर स्थित श्री जैन श्वेताम्बर संस्था के चातुर्मास में तपस्याएँ बिना आडम्बर के एवं आरम्भ-समारम्भ रहित हो रही है। श्रीमती श्वेता विनीतजी मुणोत 'रियां वाले' ने मासखमण की तपस्या की। श्रीमती सन्तोषजी रांका ने 15, श्रीमती राखीजी गेलड़ा ने 11 की तपस्या की साथ ही अनेक अठाइयाँ हुई। सिद्धितप एवं 50 से अधिक तेलों की आराधना सम्पन्न हुई। महासतीवृन्द के रोचक एवं प्रेरणास्पद प्रवचनों से श्रोता प्रमुदित है। श्रीमती जयाजी गोखरू ने मुम्बई से आकर 9 दिवसीय तप किया। श्रीमती राजेशजी डूँगरवाल (थाँवला वाले), श्री विकासजी मेहता-जयपुर, श्वेताजी जैन, निशाजी मेहता, पूजाजी गांधी, शशिजी कोठारी आदि ने अठाई की तपस्या की। आठ दिवस अखण्ड नवकार महामंत्र का जाप किया गया। बालक-बालिकाओं ने सुन्दर संवाद प्रस्तुत किये।-उम्मेदमल चौपड़ा, अध्यक्ष

नंदूरबार (महा.)– विदुषी महासती श्री सौभाग्यवतीजी म.सा. आदि ठाणा 5 के सान्निध्य में चातुर्मास प्रारम्भ से संवत्सरी तक तपस्याओं का क्रम निरन्तर गतिमान रहा। सभी महासतीजी के उपवास का एकान्तर तप चल रहा है। 2 मासक्षमण, 2 सोलह की तपस्या, 9 ग्यारह की तपस्या, 1 दस की तपस्या, 10 नौ की तपस्या, 15 अठाई, 3 पचोला, 3 चौला, 40 तेले, अनेक उपवास, 35 एकाशन सिद्धितप, 1 आयम्बिल का मासखमण, एकाशन का मासखमण एवं उपवास के एकान्तर तप चल रहे हैं। पर्युषण के आठों दिनों में सिद्धपद की आराधना करवायी गई, जिसमें लगभग 100 लोगों ने भाग लिया। संवत्सरी के दिन आलोयणा, पट्टावली, जैनाचार्य चरितावली का वाचन महासतीजी द्वारा किया गया। प्रत्येक रविवार को 'जैन इतिहास के प्रसंग' पुस्तक पर खुली परीक्षा का आयोजन किया गया, जिसमें पाँच-पाँच लोगों के समूह के साथ 75 श्रावक-श्राविका लाभ ले रहे हैं।-माणकलाल आसकरण सिसोदिया, नंदूरबार

जामोला–अजमेर (राज.)– व्याख्यात्री महासती श्री मनोहरकंवरजी म.सा. आदि ठाणा 3 की पावन प्रेरणा से जामोला संघ में चातुर्मास के प्रारम्भ से ही निरन्तर धर्माराधना हो रही हैं। प्रातःकालीन प्रार्थना, प्रवचन, दोपहर को ज्ञानचर्चा, सायंकालीन प्रतिक्रमण एवं रात्रि को भक्ति तथा ज्ञानार्जन के कार्यक्रम निरन्तर चल रहे हैं। पर्युषण के पावन अवसर पर एकाशन, उपवास, आयंबिल, दया-संवर एवं पौषध आराधना अच्छी संख्या में हुई। श्रावक-श्राविका निरन्तर नया ज्ञान सीख रहे हैं। धर्माराधना से जामोला संघ में उत्साह का वातावरण हैं।-सुनीलकुमार बम्ब, मंत्री

बारनीखुर्द, जोधपुर (राज.)– व्याख्यात्री महासती श्री सोहनकंवरजी म.सा. आदि ठाणा 5 का मंगल चातुर्मास अपूर्व उत्साह के साथ निरन्तर प्रवाहमान है। तप की

साधना में 330 एकाशन, 180 उपवास, 5 पचौले, 4 बेले, 70 तेले, 4 की तीन, 5 की पाँच तपस्याएँ हुई। 15 अठाई, 11 की एक, नौ की 5 तपस्याएँ के साथ दो अष्ट प्रहर पौषध एवं तीन एकाशन के मासक्षमण हुए। दोपहर में कल्पसूत्र का वाचन, प्रतियोगिता का कार्यक्रम, शाम को प्रतिक्रमण हुआ। कार्यक्रम का सफल संचालन श्री हंसराजजी चौपड़ा-गोटन ने किया। दर्शनार्थियों में भोपालगढ़, नाडसर, गोटन, मेड़ता, जयपुर, आसोप, कुड़ी, अरटिया आदि संघों ने प्रवचन श्रवण एवं दर्शन-वंदन का लाभ लिया।

विभिन्न विषयों पर महासतीवृन्द के प्रवचन चल रहे हैं, जिसमें लगभग 200 से 250 की उपस्थिति रहती है। 29-30-01 सितम्बर को सामूहिक एकाशन का कार्यक्रम रखा गया, जिसमें 200 के लगभग एकाशन हुए। पर्युषण में आठ दिन तक 12 घण्टे का नवकार मंत्र का जाप रखा गया। तप-त्याग के क्षेत्र में अब तक वीर परिवारों से एवं अन्य परिवारों से विभिन्न तपस्याएँ सानन्द सम्पन्न हुई। साथ ही प्रति रविवार को बच्चों का शिविर एवं प्रतियोगिता होती है एवं प्रतिदिन बच्चों की धार्मिक पाठशाला चलती है, जिसमें 20-25 बच्चें अध्ययन कर रहे हैं। -लोकेश सिंघवी, बारनी

सरस्वतीनगर, जोधपुर (राज.)– व्याख्यात्री महासती श्री चन्द्रकलाजी म.सा. आदि ठाणा 5 के सरस्वतीनगर जोधपुर के चातुर्मास में धार्मिक आराधना का विवरण इस प्रकार हैं- वीर माता श्रीमती कमलाजी पींचा द्वारा 11 गणधर के ग्यारह बेले एवं फिर तेले की आराधना की गई। 5 श्राविकाओं द्वारा एकान्तर की तपस्या चल रही हैं। सिद्धितप एक, एकाशन का मासक्षपण 5, एक 47 की तपस्या, मासक्षपण 1, 15 की तपस्या एक, पर्युषण पर्व के अवसर पर 50 तेले, 10 अठाइयाँ, 9 की तपस्या एक, 11 की तपस्या एक, 15 तपस्या एक, चोले 5, बेले 2, पर्युषण पर्व में आठों दिन नवकार महामंत्र का जाप, प्रवचन के बाद प्रश्नोत्तरी, दोपहर में कल्पसूत्र, सिद्ध भगवान की आराधना, संवत्सरी प्रतिक्रमण में 250 श्रावकों एवं 200 श्राविकाओं की उपस्थिति रही तथा 70 पौषध-संवर हुए। श्राविकाएँ एवं बालक-बालिकाएँ सामायिक, प्रतिक्रमण, पच्चीस बोल एवं दशवैकालिक का अध्ययन कर रहे हैं।-आनन्दप्रकाश कवाड़

किलपॉक, चेन्नई (तमिलनाडु)– व्याख्यात्री महासती श्री इन्दुबालाजी म.सा. आदि ठाणा 10 के विराजने से तपाराधना, ज्ञानाराधना एवं धर्माराधना का क्रम निरन्तर गतिमान है। प्रातःकालीन वेला में 7.45 से 8.45 तक विशेष कक्षा का आयोजन प्रभावी ढंग से चल रहा है। प्रातः 9.15 से 10.30 बजे तक प्रवचन एवं दिन में ज्ञान-ध्यान सिखाने का क्रम जारी है। गुरु पूर्णिमा के दिन महासतियाँजी के सान्निध्य में रात्रि को लगभग 300 महिलाओं ने सामायिक व्रत की आराधना के साथ ज्ञानार्जन का लाभ लिया तथा भोजनशाला के प्रांगण में लगभग 90 श्रावकों ने सामायिक-व्रत की आराधना का लाभ लिया। श्राविकाओं ने गोचरी दया का कार्यक्रम रखा, जिसमें 45 श्राविकाओं ने भाग लिया। जैन धर्म के बारे में अनेक जानकारी प्रदान करने वाला कार्यक्रम श्रावकसंघ द्वारा विभिन्न स्टॉलों के माध्यम से रखा गया, जिसमें लगभग 1700 श्रावक-श्राविकाओं ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। अनेक श्रावक-श्राविका 32

आगम के बारे में जानकारी कर रहे हैं। पचोले की लड़ी चातुर्मास के प्रारम्भ से ही चल रही है। उपवास से सिद्धितप की आराधना श्री पवनजी बोहरा के चल रही है। लगभग 100 श्रावक-श्राविकाएँ एकाशन से सिद्धितप की आराधना कर रहे हैं। जिसका समापन आचार्य भगवन्त के 57 वें दीक्षा दिवस 02 नवम्बर, 2019 को होगा। रविवारीय पाठशाला के माध्यम से लगभग 50 बालक-बालिकाओं ने प्रतिक्रमण तथा 150 बालक-बालिकाओं ने सामायिक कण्ठस्थ की है। तपस्या के क्रम में 61 की तपस्या, 16 मासक्षपण, सिद्धितप उपवास दो, 19 की दो, 15 की 8, 14 की 3, 13 की 2, 11 की 21, 9 की 48, अठाई 57, 6 की 5, 5 की 116, सिद्धितप एकाशन 104 आदि तपस्याएँ हुई।-सुगनचन्द बोथरा

जवाहरनगर, जयपुर– व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलताजी म.सा. आदि ठाणा 9 के सान्निध्य में राजस्थान की राजधानी जयपुर के श्री जैन श्वेताम्बर संघ, जवाहर नगर में इस वर्ष पर्वाधिराज पर्युषण में अद्भुत् धर्मसाधना हुई। महासती मण्डल के अमृतमय प्रवचन के पश्चात् सभी जिज्ञासु श्रावक-श्राविकाएँ उत्तराध्ययन सूत्र, 25 बोल का स्वाध्याय महासती मण्डल के चरणों में बैठकर कर रहे हैं। सिद्धपद की आराधना में 65 श्रावक-श्राविकाओं ने साधना का लाभ लिया। दोज के दिन दया एवं एकाशन 300 व्यक्तियों ने किये। तपस्या का क्रम चातुर्मास प्रारम्भ से चल रहा है जिसका पर्युषण महापर्व के अवसर पर विशेष उत्साह देखा गया। एक मासखमण, 15 दिवसीय उपवास 2, ग्यारह उपवास 3, नौ उपवास 6 एवं लगभग 55 अठाई तप सम्पन्न हुये। संवत्सरी के पश्चात् भी अनेक तपस्वी इस मार्ग में आगे बढ़ रहे हैं। 25 सितम्बर को 5 तपस्वियों ने 30 दिवसीय मासखमण के एक साथ प्रत्याख्यान करके जवाहर नगर में स्वर्णिम इतिहास रचा। पर्युषण में प्रतिदिन 25-30 श्रावक तथा 50 श्राविकाएँ संवर-पौषध करते थे। संवत्सरी पर लगभग 300 पौषध हुये। समागत श्रद्धालुओं के स्वधर्मी वात्सल्य हेतु संघ तत्पर है।-सुनील मुणोत, जयपुर

जलगांव (महा.)– व्याख्यात्री महासती श्री चारित्रलताजी म.सा. आदि ठाणा 5 के सान्निध्य में चातुर्मास के प्रथम दिवस से ही 24 दिन तक 24 तीर्थकर भगवान की आराधना हुई। लगभग 57 श्रावक-श्राविकाओं ने लगातार 24 दिन तक स्थानक में रुककर संवर साधना एवं बियासन तपस्या के साथ तीर्थकर भगवन्तों की आराधना की। श्रीमती अंबर बहिन मोदी, मुलुंड-मुम्बई द्वारा मासखमण की तपस्या की गई। अधिकांश समय मौन साधना एवं पौषध में व्यतीत हुआ। वीरपिता श्री राजेशजी जैन ने 18 की तपस्या की। आयम्बिल, एकाशन, तेले की लड़ी तथा अनेक तपस्याएँ चल रही हैं। हर 15 दिन में जैनधर्म का मौलिक इतिहास की 40 पुस्तकों पर आधारित खुली पुस्तक परीक्षा का आयोजन किया जा रहा है, साथ ही हर रविवार बच्चों को जैनधर्म के सामान्य ज्ञान पर आधारित पत्रक द्वारा जानकारी देकर परीक्षा प्रतियोगिता हो रही है। युवाओं के लिए सुबह 7 से 8 बजे तक निरन्तर धार्मिक कक्षा चल रही है। इसमें कर्मप्रकृति आदि विषयों को महासतीजी द्वारा सुन्दर विवेचन कर समझाया गया। मध्याह्न 1.30 से 2.30 बजे तक निरन्तर वाचनी एवं तत्पश्चात् बहूमण्डल की धार्मिक

कक्षाएँ हो रही हैं। हर माह के द्वितीय शनिवार एवं रविवार को प्रवचन के पश्चात् से सांय 4.00 बजे तक कर्मग्रन्थ की कार्यशाला का आयोजन किया जा रहा है। रक्षाबन्धन पर 2 युगलों द्वारा आजीवन शीलव्रत के, आजीवन एवं वर्ष भर के लिए रात्रि-भोजन त्याग, जमीकन्द त्याग, कच्चे पानी का त्याग, नित्य सामायिक आदि के नियम प्रत्याख्यान हुए। पर्युषण काल में सिद्ध पद आराधना का आयोजन किया गया। साथ ही नवकार महामन्त्र के अखण्ड जाप का भी आयोजन किया गया। पर्युषण काल में लगभग 60-70 अठाई की तपस्याएँ हुई। 3-5-9-11-15 आदि की अनेक तपस्याएँ सम्पन्न हुई। संवत्सरी पर्व पर लगभग 500 संवर-पौषध की आराधना एवं अनेक तप त्याग हुए। सुशील बहूमण्डल एवं श्राविका मण्डल द्वारा जिनशासन मेला आयोजित हुआ, जिसमें 20 स्टॉल लगाकर एक-एक मिनिट के धार्मिक खेल की प्रतियोगिता रखी गई। दिन भर में लगभग 1200-1300 श्रावक-श्राविकाओं ने भाग लिया। 10 वर्षीय बालक मोक्ष सुपुत्र श्री आनन्दजी कोठारी ने 15 की तपस्या की। इस अवसर उसके दादाजी श्री वर्धमानजी कोठारी (जिन्होंने पूर्व में 16 मासखमण किए हुए हैं) शीलव्रत के नियम ग्रहण कर अनुपम उदाहरण प्रस्तुत किया। -महावीर बोथरा

बीजापुर (कर्नाटक)– व्याख्यात्री महासती श्री निःशल्यवतीजी म.सा. आदि ठाणा 5 के सान्निध्य में बीजापुर कर्नाटक में धर्मध्यान का ठाट लगा हुआ है। आजीवन शीलव्रत ग्रहीता-1. श्रीमती कमलादेवी जी-पारसमलजी बागरेचा, 2. श्रीमती नाथीदेवीजी-राणमलजी ओस्तवाल, 3. श्रीमती सरोजबाईजी-संजयलालजी रूणवाल, 4. श्रीमती कमलाबाईजी-सोहनलालजी बुरड़, 5. श्रीमती कस्तुरबाईजी-लालजी भाई शाह। 08 सितम्बर को बालिका मण्डल का गठन हुआ, जिसमें लगभग 23 बालिकाएँ जुड़ी हैं। कुमारी मोनिका लुंकड-अध्यक्ष, कुमारी श्रुतिश्री रूणवाल-मन्त्री और कुमारी पूनम पारेख-कोषाध्यक्ष नियुक्त की गयी। दो बार प्रातः 9 से सायं 4 बजे तक लगातार दो दिवस का बालक-बालिकाओं का शिविर आयोजित हुआ, जिसमें लगभग 79 बच्चों ने भाग लिया। अभी तक 27 प्रतियोगिताएँ आयोजित हुई, जिसमें 284 प्रतियोगियों ने भाग लिया। पर्युषण पर्व में आठ दिवस 12 घण्टे का जाप रहा, प्रतिदिन चार माह के लिए 1 घण्टे का जाप चल रहा है। प्रत्येक रविवार को प्रातः कक्षा में लगभग 40 युवक भाग ले रहे हैं। प्रत्येक रविवार को मध्याह्न में 2 से 4 बजे तक बच्चों का शिविर आयोजित होता है। चातुर्मास काल में तेले एवं आयम्बिल की लड़ी निरन्तर गतिमान है। तेले 99, चोले 5, पचोले 3, अठाई 14, नौ के उपवास 3, ग्यारह के उपवास 2, पन्द्रह के उपवास 2, एकान्तर उपवास 13, आयम्बिल और नींवी के मासखमण 8 सम्पन्न हुए हैं। 11-11 सामायिक की पचरंगी दो बार और नवरंगी 1 बार सम्पन्न हो चुकी है। अनगिनत उपवास, कई एकाशन एवं आयम्बिल सम्पन्न हुए। सप्त कुव्यसन के त्याग, रात्रिभोजन एवं ब्रह्मचर्य की मर्यादा कई श्रावक-श्राविकाओं ने की है।-नितिन डी. रूणवाल, मन्त्री

भरतपुर (राज.)– व्याख्यात्री महासती श्री मुक्तिप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा 4 के वासनगेट स्थित महावीर भवन में चातुर्मास की शुरुआत से ही महासतियों के पावन

सान्निध्य में बियासना, एकासना, आयम्बिल, उपवास, तेला, अठाई, 108 वंदना व संवर की लड़ियाँ निरन्तर निराबाध रूप से प्रवाहमान व गतिमान है। स्थानकवासी श्वेताम्बर, मूर्तिपूजक, दिगम्बर एवं जैनेतर भाई-बहिन अच्छी संख्या में प्रवचन का लाभ ले रहे हैं। प्रत्येक रविवार को बच्चों, युवकों एवं बुजुर्गों में ज्ञानवर्धन हेतु प्रतियोगिताएँ हो रही हैं। अब तक चातुर्मास में हुई तपस्याएँ इस प्रकार हैं- अशोकजी जैन के 11 की, पूरणचन्दजी जैन-हिण्डौन के 11 की, नीशाजी जैन के 9 की, मयंकजी जैन के 9 की, राजुलजी जैन के 8 की, उमादेवीजी जैन के 8 की तपस्याएँ सम्पन्न हुई। नवीनजी जैन किरावली वालों के 7 की तपस्या चल रही है। सुश्री अंतिमा जैन ने आज 18 के प्रत्याख्यान ग्रहण किए। साथ ही उनके आगे बढ़ने के भाव है। व्याख्यात्री महासती श्री मुक्तिप्रभाजी म.सा. अपनी मधुरवाणी में राजा श्रेणिक तथा सती अंजना के चरित्र के साथ 25 बोलों पर बढ़े ही सुन्दर ढंग से प्रवचन फरमा रहे है। महासती श्री कोमलश्रीजी म.सा. सुबाहुकुमार चरित्र प्रवचन के माध्यम से सुना रहे है।

पर्युषण पर्व में भाइयों एवं बहनों में नवकार मंत्र का 8 दिवसीय अखण्ड जाप चला। महासती श्री कोमलश्रीजी म.सा. ने अन्तगडदशा सूत्र के माध्यम से प्रवचन की शुरुआत की। उसके पश्चात् महासती श्री संयमप्रभाजी म.सा. ने बड़े ही सुन्दर व रोचकता के साथ प्रवचन सभा में अपने उद्बोधन से श्रोताओं को मंत्रमुग्ध किया। दोपहर में महासती श्री उदितप्रभाजी म.सा. ने कल्पसूत्र का वाचन किया।

पर्युषण पर्व के दिनों में युवती मण्डल व महिला मण्डल की ओर से भगवान महावीर के जीवन पर आधारित नाटिका प्रस्तुत की गई। भाई-बहिनों में सामयिक की तीन पंचरंगी हुई। चातुर्मास शुरुआत से ही प्रतिक्रमण में बहनों की अच्छी उपस्थिति रहती है। कुछ बालिकाएँ प्रतिक्रमण, 25 बोल एवं दशवैकालिकसूत्र सीख रही हैं।

चातुर्मास एवं पर्युषण में अब तक बेला, तेला, चौला, पचौला, आठ, नौ, ग्यारह की अनेक तपस्याएँ सम्पन्न हुई हैं। प्रत्येक रविवार को बहनों ने दया की। पर्युषण पर्व में भाई-बहिनों के द्वारा धर्म चक्र की आराधना हुई।-धमेन्द्र जैन, अध्यक्ष

कजगांव (महा.)– सेवाभावी महासती श्री विमलेशप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा 3 के सान्निध्य एवं प्रेरणा से चातुर्मासिक सभी धार्मिक कार्यक्रम सुचारू रूप से निरन्तर गतिमान हैं। पर्वाधिराज पर्युषण पर्व में अन्तगडदसासूत्र के वाचन के साथ प्रवचन में भी उपस्थिति पूर्ण रूप से बनी रही। पर्युषण पर्व में सभी ने सामायिक, संवर, पौषध, प्रतिक्रमण का लाभ लिया और मध्याह्न में कल्पसूत्र, धार्मिक परीक्षाएँ, अठारह पापस्थान की आलोचना की गई और सवत्सरी के दिन 24 घण्टे अखण्ड नवकार महामन्त्र के जाप का आयोजन किया गया। तपस्या का विवरण इस प्रकार से है- मासखमण 1, पच्चीस की तपस्या 1, सोलह की तपस्या 1, पन्द्रह की तपस्या 1, ग्यारह की तपस्या 5, नौ की तपस्या 3, अठाई 3, सात की तपस्या 2, पचोला 1 और तेले, एकाशन, आयम्बिल की लड़ी भी चल रही है। पूज्या महासतीजी म.सा. के सान्निध्य में जिज्ञासु श्रावक- श्राविकाएँ ज्ञानार्जन का लाभ मध्याह्न में थोकड़ों के माध्यम से ले रहे हैं। जैसे-25 बोल, समिति-गुप्ति, 67 बोल, नौ तत्त्व, सीझणा पद, अबाधा काल तथा

छोटे-बड़े अन्य थोकड़े सिखाये जा रहे हैं। उत्तराध्ययन सूत्र के 36 अध्ययन का 36 श्रावक-श्राविकाओं द्वारा पाठ किया जा रहा है। आगम में नन्दीसूत्र, पुच्छिसुणं के पाठ भी महासती मण्डल द्वारा दिए जा रहे हैं।-चेतन धाड़ीवाल, अध्यक्ष-कजगांव संघ

गुलाबपुरा, भीलवाड़ा (राज.)– व्याख्यात्री महासती श्री विनीतप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा 4 के सान्निध्य में चातुर्मास के दौरान गुलाबपुरा महिला मण्डल की ओर से पंचदिवसीय शिविर 29 जुलाई से 02 अगस्त, 2019 तक आयोजित किया गया। पर्युषण पर्व के दौरान संघ के श्रावक-श्राविकाओं ने त्याग, तपस्या में पूर्ण श्रद्धा से अपना योगदान दिया है, अब तक 10 अठाई, 50 तेले, 225 एकाशन, 280 के लगभग उपवास हो चुके हैं। इसके अलावा सतरंगी, दया, नींवी, आयम्बिल, एकाशन का मासखमण, धार्मिक प्रतियोगिताएँ आदि गतिमान हैं। श्राविकाओं ने सामायिक, प्रतिक्रमण, अनेक थोकड़े सीखने के साथ अनेक प्रत्याख्यान भी ग्रहण किए हैं।-हनुमानसिंह बरड़िया

हुबली (कर्नाटक)– व्याख्यात्री महासती श्री रुचिताजी म.सा. आदि ठाणा 6 के सान्निध्य में चातुर्मास के दौरान धर्मध्यान एवं तप साधना निरन्तर गतिमान है। पर्युषण पर्व तप-आराधना के साथ सुसम्पन्न हुआ, जिसमें आठ दिन अखण्ड नवकार महामन्त्र का जाप, 9 दिन नवरंगी का अनुष्ठान, पचरंगी का अनुष्ठान, विविध धार्मिक प्रतियोगिताएँ, 8 दिनों में संवर 82 से लेकर 108, महापर्व संवत्सरी के दिन पौषध 8 प्रहर के 82, 12 प्रहर के लगभग 25, संवर 600 के लगभग, उपवास 1100, बेला 200, तेला 200, चोला 15, पचोला 11, सात की तपस्या 2, अठाई 41, नौ की तपस्या 11, 12-13-15 की तपस्या 5, मासखमण 2, सिद्धि तप 2, सागरजी मदनलालजी तातेड़ ने 23 वर्ष की अल्पायु में गुरुदेव के चरणों में 36 उपवास की भेंट प्रदान की। धर्मध्यान, तप-आराधना, संवर-पौषध, दया का लगभग मेला-सा लग गया। एकाशन के मासखमण 10 और एकान्तर की 10 तपस्या सम्पन्न हुई। सभी महासतियाँ जी के सवंत्सरी के चौविहार उपवास पूर्ण हुए, तत्पश्चात् महासती श्री रुचिताजी म.सा. के 5 की तपस्या, महासती श्री कृपाश्रीजी के तेला, महासती श्री प्रज्ञाश्रीजी के चौविहार तेले की तपस्या सुसम्पन्न हुई।-मुकेश भण्डारी

महावीरनगर, जयपुर (राज.)– व्याख्यात्री महासती श्री स्नेहलताजी म.सा. आदि ठाणा 3 के सान्निध्य में पर्युषण पर्व के आठ दिनों में अंतगड सूत्र के वाचन, प्रवचन, जाप आदि के कार्यक्रम सोत्साह सम्पन्न हुए। यहाँ अठाई 10, एक नौ दिवसीय, एक ग्यारह दिवसीय तप के साथ चौला, पचौला, 25 तेले एवं लगभग 750 उपवास, एकाशन के दो मासखमण, दो नींवी की अठाई आदि अनेक तप सम्पन्न हुए।-प्रमोद लोढ़ा

अमलनेर (महा.)– व्याख्यात्री महासती श्री पद्मप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा 4 के सान्निध्य में चातुर्मास प्रारम्भ से ही दयाव्रत- एकाशन की लड़ी, आयम्बिल-नींवी की लड़ी, उपवास और तेले की लड़ी चल रही है। पर्युषण पर्व के पहले ही मासखमण 1, अर्द्ध मासखमण 3, 8-9-11 की 8 तपस्याएँ पूर्ण हो चुकी थी। आठों ही दिनों में दयाव्रत, संवर, एकाशन, पौषध व्रत करने वालों के लिए सुलभता रही। प्रवचन में तेरापंथी, दिगम्बर श्रावक-श्राविकाओं के साथ-साथ जैनेतर भाई-बहिनों की भी

उपस्थिति रही। रक्षाबन्धन निमित्त लगभग 42 अठाइयाँ और 500 से अधिक पौषधोपवास और संवर हुए। तपस्वियों में से कई तपस्वी 9-11-15 और मासखमण की ओर बढ़ने की भावना रखे हुए हैं। प्रवचन के माध्यम से महासतीजी ने समाज प्रबोधन का बहुत बड़ा काम किया है। पर्युषण के 7वें दिन दुर्व्यसनों के परिणाम और दुष्परिणामों पर प्रवचन हुआ तो 31 युवकों ने गुटखा, पान, तम्बाकू और बीड़ी का जीवन भर के लिए त्याग किया। समाज की कुरीतियों पर प्रतिबन्ध लगा-जैसे बुफे सिस्टम, रात्रिभोजन, संगीत सन्ध्या, स्त्रियों का नाचगान आदि। अनेक विषयों पर महासतीजी ने उद्‌बोधन दिया, जिससे कई लोगों का जीवन परिवर्तन हुआ, यह बड़ी उपलब्धि है। 3 से 9 सितम्बर तक हुयी तपस्याएँ- सतरह की तपस्या 1, सोलह की तपस्या 1, पन्द्रह की तपस्या 1, बारह की तपस्या 1, नौ की तपस्या 7, अठाई 31 के साथ कई तपस्या अभी जारी है। जिनमें सात की तपस्या 3, पाँच की तपस्या एक गतिमान है।-राजमल संचेती, सचिव

खेरलीगंज– व्याख्यात्री महासती श्री निष्ठाप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा 3 के सान्निध्य में खेरली चातुर्मास में धर्म की गंगा प्रवाहमान हो रही है। पर्युषण पर्व पर श्री बालकिशनजी जैन और श्रीमती सरलाजी जैन ने शीलव्रत अंगीकार किया। ग्यारह की तपस्या 2, नौ की तपस्या 2, पाँच की तपस्या 2, चार की तपस्या 1, तेले की तपस्या 9 हुई तथा इसके साथ कई छोटी-बड़ी अनेक तपस्याओं के प्रत्याख्यान ग्रहण किये गये। आठों दिवस बारह घण्टे का नवकार महामंत्र का जाप हुआ। पर्युषण पर्व के दौरान प्रवचन में महासतीजी ने अपनी मधुरवाणी में अंतगडदसा सूत्र का वाचन-विवेचन प्रस्तुत किया।-कमलचन्द जैन, अध्यक्ष, खेरली संघ

धुलिया (महा.)– व्याख्यात्री महासती श्री शिक्षाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा 4 के चातुर्मास में निरन्तर धार्मिक कार्यक्रम गतिमान हैं। धुलिया में इस वर्ष चार-चार चातुर्मास होने के बाद भी प्रवचन में अच्छी उपस्थिति रहीं। प्रातःकाल 7 से 8 बजे तक विशेष कक्षाओं के माध्यम से गुण विकास साधना के अन्तर्गत 46 युवकों ने 25 थोकड़ों का अध्ययन किया। प्रातःकालीन प्रवचन में सुखविपाक सूत्र, सूत्रकृतांग, उत्तराध्ययन एवं कर्म सिद्धान्त पर आधारित प्रवचन दिया गया। 10.15 से 11.15 बजे तक श्राविकाओं के लिए 36 थोकड़ों का अध्ययन कराया गया, जिसमें 62 श्राविकाओं ने भाग लिया। दोपहर 2.00 से 2.30 बजे तक जैन धर्म का मौलिक इतिहास की वाचनी का कार्यक्रम रखा गया। 15 श्राविकाएँ नन्दीसूत्र कण्ठस्थ कर रही हैं। 60 श्रावकों एवं 75 श्राविकाओं ने पच्चीस बोल कण्ठस्थ किया। दो महिनों तक प्रतिदिन 10.00 से 4.00 बजे तक नवकार महामंत्र का जाप हुआ। प्रत्येक रविवार 2.00 से 4.00 बजे तक बच्चों का शिविर चल रहा है। प्रत्येक रविवार को युवकों के लिए विविध विषयों के माध्यम से कक्षाएँ लगाई जा रही है, जिसमें 90 युवक भाग ले रहे हैं। इतिहास की परीक्षा में लगभग 170 सदस्य भाग ले रहे हैं। पर्युषण पर्व के अवसर पर सिद्ध पद की आराधना में 300 श्रावक-श्राविकाओं ने भाग लिया। दोपहर को धार्मिक प्रतियोगिताओं में 175 श्रावक-श्राविकाओं ने भाग लिया। श्री आशीषजी अशोकजी बोहरा ने उपवास

का सिद्धितप किया। सौभाग्यवती श्रीमती रीनाजी-निर्भयजी चौधरी ने मासक्षपण किया। 15 की तीन, 11 की आठ, 9 की सात, अठाई पचास, 4 पचौले एवं 70 तेलों की आराधना हुई। वर्तमान में 14 एवं 21 की तपस्या चल रही है। दो महिने से निरन्तर तेले एवं आयंबिल की लड़ी चल रही है। संवत्सरी के दिन 400 पौषध-संवर हुए। श्री दिनेशजी बरड़िया ने शीलव्रत अंगीकार किया। आठ जनों ने एक वर्ष तक शीलव्रत नियम ग्रहण किया। अनेक श्रावक-श्राविकाओं ने महासतीजी की प्रेरणा से त्याग-प्रत्याख्यान ग्रहण किया।-संजय हरकचन्द बोहरा

पाली में गुणी अभिनन्दन एवं सम्मान समारोह का भव्य आयोजन

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के तत्त्वावधान में गुणी अभिनन्दन एवं सम्मान समारोह का आयोजन 29 सितम्बर 2019 को श्री जैन रत्न छात्रावास, सरस्वती नगर स्कूल के पीछे, आनन्द नगर, पाली में दोपहर 12.30 बजे प्रारम्भ हुआ। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में पाली विधानसभा क्षेत्र के विधायक माननीय श्री ज्ञानचन्दजी पारख पधारे। कार्यक्रम की अध्यक्षता संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष न्यायमूर्ति माननीय श्री प्रकाशजी टाटिया-जयपुर ने की। मंच पर संघ सरंक्षक मण्डल के संयोजक माननीय श्री मोफतराजजी मुणोत-मुम्बई, संघ संरक्षक श्री कैलाशचन्दजी हीरावत-जयपुर, संघ के राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष श्री आनंदजी चौपड़ा-जयपुर, श्री बुधमलजी बोहरा-चेन्नई, राष्ट्रीय महामंत्री श्री धनपतजी सेठिया-जोधपुर, सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के अध्यक्ष श्री चंचलमलजी बच्छावत-कोलकाता, श्राविका मण्डल की कार्याध्यक्ष श्रीमती बीनाजी मेहता-जोधपुर, युवक परिषद् के अध्यक्ष श्री मनीषजी मेहता-जयपुर, पाली के संघ अध्यक्ष श्री छगनलालजी लोढ़ा-पाली, चातुर्मास समिति के संयोजक श्री रूपकुमारजी चौपड़ा-पाली विराजमान हुए।

कार्यक्रम का शुभारम्भ पाली श्राविका मण्डल के मंगलाचरण से हुआ। तत्पश्चात् पधारे हुए अतिथियों के स्वागत में श्राविका मण्डल ने स्वागत गीत प्रस्तुत किया।

मुख्य अतिथि श्री ज्ञानचन्दजी पारख का संघ संरक्षक मण्डल के संयोजक श्री मोफतराजजी मुणोत ने माल्यार्पण तथा संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष न्यायमूर्ति श्री प्रकाशजी टाटिया ने शॉल तथा स्मृति चिह्न भेंट कर अभिनन्दन किया।

संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री प्रकाशजी टाटिया-जयपुर ने समारोह में पधारे सभी अतिथियों एवं संघ सदस्यों का हृदय से स्वागत करते हुए गुणी अभिनन्दन समारोह की पृष्ठभूमि पर अपने उद्‌गार रखे। उन्होंने कहा कि जिस संघ-समाज में गुणियों का सम्मान होता है वही संघ-समाज आगे बढ़ता है। हमारे रत्नसंघ की परम्परा है कि संघ-सेवियों एवं गुणीजनों को चयन कर उनको सम्मानित किया जाता है। प्रतिभाशाली संघ-सेवी, तपस्वी, उत्कृष्ट लेखक, विद्वान मनीषियों का सम्मान करना हमारा परम कर्त्तव्य है।

सम्मान समारोह कार्यक्रम में सर्वप्रथम संघ के प्रति प्रदत्त समर्पित सेवाओं के लिए संघ संरक्षक पूर्व न्यायाधिपति माननीय श्री जसराजजी चौपड़ा-जयपुर को "संघरत्न सम्मान" से मुख्य अतिथि श्री ज्ञानचन्दजी पारख एवं मंचासीन पदाधिकारियों द्वारा सम्मानित किया गया, साथ ही रजत पट्टिका पर अंकित प्रशस्ति-पत्र एवं अभिनन्दन-पत्र भेंट किया। अभिनन्दन-पत्र का वाचन शासन सेवा समिति के सदस्य श्री नौरतनमलजी मेहता-जोधपुर ने किया। इस अवसर पर न्यायमूर्ति श्री जसराजजी चौपड़ा ने अपने ओजस्वी वक्तव्य में फरमाया कि- ''आज संघ ने मुझे इतना बड़ा सम्मान दिया, जिससे मैं अभिभूत हूँ। संघ एवं संघनायक के प्रति समर्पित होने की बात रखते हुए कहा है कि हमें भी संघ में शक्कर की तरह घुल जाना है। संघनिष्ठ, संघ समर्पित होना है। संघ का हित मेरे लिए एवं हमसब के लिए सर्वोपरि हैं।''

"आचार्य हस्ती स्मृति सम्मान–2019" साहित्य-प्रेमी डॉ. शुगनजी जैन-दिल्ली को उनकी मौलिक कृति ''आचार्य श्री हस्तीमलजी म.सा. द्वारा लिखित जैन लिजेण्ड (जैन धर्म का मौलिक इतिहास संक्षिप्त अंग्रेजी अनुवाद) भाग 1 से 4'' हेतु सम्मानित किया गया। डॉ. शुगनजी जैन को एक लाख की राशि के साथ प्रशस्ति-पत्र भेंट किया गया।

विशिष्ट स्वाध्यायी सम्मान–2019 के अन्तर्गत वरिष्ठ स्वाध्यायी श्री हीरालालजी मण्डलेचा-जलगांव तथा वरिष्ठ स्वाध्यायी श्री शिखरचन्दजी छाजेड़-करही को सम्मानित किया गया। दोनों को 21 हजार की राशि एवं प्रशस्ति-पत्र भेंट किया गया।

विशिष्ट महिला स्वाध्यायी सम्मान–2019 के अन्तर्गत श्राविकारत्न श्रीमती सुशीलाजी गोलेच्छा-जोधपुर तथा श्राविकारत्न श्रीमती पुष्पाजी मेहता-पीपाड़शहर को सम्मानित किया गया। दोनों को 21 हजार की राशि एवं प्रशस्ति-पत्र भेंट किया गया।

विशिष्ट युवा स्वाध्यायी सम्मान–2019 हेतु संघनिष्ठ, युवारत्न श्री मुकेशजी बुरड़-शिरपुर को सम्मानित किया गया, उन्हें 21 हजार की राशि एवं प्रशस्ति-पत्र भेंट किया गया।

युवा प्रतिभा शोध–साधना–सेवा सम्मान–2019 हेतु प्रतिभा सम्पन्न शिक्षाविद् श्री शुभांशुजी जैन-अलीगढ़-रामपुरा को इण्डियन सिविल सर्विसेज परीक्षा में 203 वीं रेंक प्राप्त करने पर सम्मानित किया गया। उन्हें रजत पट्टिका पर अंकित प्रशस्ति-पत्र प्रदान किया गया।

गुणी अभिनन्दन–2019 के अन्तर्गत चतुर्विध संघ-सेवा के लिए डॉ. मनीषजी जैन-खेरली को सम्मानित किया गया। तपस्या के क्षेत्र में निरन्तर दीर्घ तपस्या हेतु श्रीमती संतोषजी डोसी-जोधपुर को सम्मानित किया गया। श्रमणोचित्त औषधोपचार के लिए डॉ. महेन्द्रजी धारीवाल-पाली एवं डॉ. अभिषेकजी तातेड़-जोधपुर को सम्मानित किया गया। इन सभी को रजत पट्टिका पर अंकित प्रशस्ति-पत्र भेंट किया गया।

करुणा पुरस्कार–2019– श्री करणीनगर विकास समिति-कोटा को

उत्कृष्ट मानव-सेवा के क्षेत्र में उल्लेखनीय सेवाएं देने हेतु सम्मानित किया गया। पुरस्कार स्वरूप 2 लाख की राशि तथा प्रशिस्त-पत्र प्रदान किया गया।

डॉ. बिमला भण्डारी जैन रत्न शोध सम्मान के अन्तर्गत डॉ. वंदनाजी मेहता-लाडनूं तथा डॉ. शरदचन्द्रजी जैन-नान्देड़ को उत्कृष्ट शोध कार्य के लिए 11,000/- की राशि प्रदान करते हुए सम्मानित किया गया।

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर द्वारा आयोजित परीक्षा में वरीयता सूची में स्थान प्राप्त करने वाले श्रीमती आराधनाजी गुलेच्छा-पाली तथा श्री धार्मिकजी जैन-जोधपुर को प्रशस्ति-पत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया।

संघ संरक्षक मण्डल के संयोजक माननीय श्री मोफतराजजी मुणोत ने अपने वक्तव्य में कहा कि हमारे संघ में ऐसे रत्न है, जिनका मार्गदर्शन संघ के लिए सदैव अमूल्य होता है। आज यहाँ उन्हीं रत्नों को सम्मानित करने का सुअवसर प्राप्त हुआ है। सम्मानित सभी रत्नों को संघ की ओर से, मेरी ओर से हार्दिक बधाई।

समारोह के मुख्य अतिथि पाली शहर विधायक श्री ज्ञानचन्दजी पारख ने अपने उद्‌बोधन में फरमाया कि दो चीजों की आवश्यकता है, एक तो तन और दूसरा तन के अन्दर आत्मा। दोनों यदि सही होंगे तो मनुष्य जीवन चलेगा। जितनी आस्था और श्रद्धा हमारी धर्म के प्रति है उतनी ही आस्था हमारे देश के प्रति भी होनी चाहिए। किसी भी समाज धर्म में कोई भी अच्छाई हमें दिखें तो उससे कुछ सीखने का हमारा प्रयास होना चाहिए, हमारी भावना होनी चाहिए कि हम श्रेष्ठ है, हमें सर्वश्रेष्ठ बनना है, श्रेष्ठतम बनना है।

कार्यक्रम के अंत में संघ महामंत्री श्री धनपतजी सेठिया ने सभी अतिथियों, सम्मानित महानुभावों तथा पधारे हुए रत्न बंधुओं-बहिनों का धन्यवाद ज्ञापित करते हुए पाली संघ की सुन्दर व्यवस्था हेतु आभार व्यक्त किया।

कार्यक्रम का सफल संचालन संघ के राष्ट्रीय संयुक्त महामंत्री श्रीमान प्रकाशजी सालेचा-जोधपुर ने किया।

संघ की विभिन्न समितियों द्वारा किए गए कार्यो की उपलब्धि एक नजर में

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ की विभिन्न समितियाँ कार्याध्यक्ष श्री आनन्दजी चौपड़ा तथा कार्याध्यक्ष श्री बुधमल जी बोहरा के निर्देशन में अपने-अपने क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य कर रही है, जिसका संघ को प्रमोद है। जिनकी संक्षिप्त रिपोर्ट इस प्रकार हैं-

1. **चिकित्सा एवं स्वास्थ्य समिति**– उपाध्यक्ष श्री मनमोहन जी कर्णावट के निर्देशन में उनकी पुरी टीम ने विशेष प्रयास किए है। पूज्य संत-सतीवृन्द की स्वास्थ्य संबंधी जानकारी को व्यवस्थित किया गया। साथ ही जहां कहीं भी संत-सतीवृन्द की स्वास्थ्य में प्रतिकूलता उपस्थित होती है, वहां श्रमणोचित औषधोपचार हेतु

प्रयास किये जाते है। व्याख्यात्री महासती श्री चन्द्रकला जी म.सा. के बड़े तथा जटिल ऑपरेशन को आदरणीय श्री मोफतराज जी मुणोत भाई साहब के अथक परिश्रम से डॉक्टर्स की टीम ने आशातीत सफल बनाया। इसमें जोधपुर संघ एवं सभी कार्यकर्ताओं का विशेष सहयोग प्राप्त हुआ। श्राविका मण्डल सह सचिव श्रीमती श्वेता जी कर्णावट का भी विशेष सहयोग प्राप्त हो रहा है। इसी के साथ ही अहमदाबाद श्रीमान् पदमचन्द सा कोठारी का भी विशेष धन्यवाद जिनके द्वारा वीर परिवार एवं गुरुभ्राताओं के अहमदाबाद इलाज हेतु पधारने पर विशेष सहयोग प्रदान किया जाता है।

2. **विहार समिति**– उपाध्यक्ष श्री पारसमल जी गिड़िया एवं उनकी टीम द्वारा संत-सतीवृन्द की विहार सेवा में सन्नद्ध रही। स्वयं गिड़िया साहब जोधपुर पधारने वाले तथा पुनः विहार करने वाले संत-सतीवृन्द की विहार सेवा में प्रतिदिन लगे रहते है। विहार सेवा में विशेष रूप से धन्यवाद है चेन्नई संघ को, जिन्होंने लगभग 1300 कि.मी. की उत्कृष्ट विहार सेवा की तथा सभी गुरुभ्राताओं ने अपना सक्रिय योगदान दिया। हैदराबाद, बैंगलोर संघ की भी विहार सेवाएं उल्लेखनीय रही। इसी के साथ ही अन्य सभी शहरों के गुरुभ्राताओं ने भी विहार सेवा का जो आदर्श उपस्थित किया, वह प्रेरणादायी है।

3. **चातुर्मास समिति**– उपाध्यक्ष श्री कुशल जी गोटेवाला ने अपनी पुरी टीम के साथ सभी चातुर्मास स्थलों पर जाकर संत-सतीवृन्द की सुखशाता की पृच्छा के साथ ही वहां की व्यवस्था का निरीक्षण किया तथा सभी कार्यकर्ताओं को चतुर्विध संघ-सेवा हेतु प्रेरित किया। विशेष रूप से इस बार चातुर्मास लगने के साथ ही जहां भी संत-सतीवृन्द का चातुर्मास नहीं हुआ, वहां दो महीने प्रतिदिन धर्माराधना का कार्यक्रम आयोजित हो, इस हेतु उनके द्वारा सफल प्रयास किया गया।

4. **अल्पसंख्यक समिति**– उपाध्यक्ष श्री नवरतन जी डागा ने इस हेतु विशेष प्रयास किये। उनकी और हम सब की यह विशेष भावना है कि सरकार द्वारा अल्पसंख्यक वर्ग को जो लाभ दिये जा रहे हैं, उनका उपयोग संघ में पूर्ण तरह से हो, एतदर्थ संघ द्वारा वात्सल्य निधि के परिवारों को इससे जोड़ने का प्रयास किया जा रहा है। साथ ही छात्रवृत्ति योजना के लाभार्थी, संस्था के छात्र एवं अन्य गुरुभ्राताओं-बहिनों को इससे लाभान्वित किया जा सके, इस हेतु प्रयास जारी है।

5. **संगठन समिति**– उपाध्यक्ष श्री सुरेश जी चोरडिया ने संगठन में एकता बनी रही, इस हेतु अपने चिन्तन से प्रयास किए। जहां भी किसी भी प्रकार की टकराव की स्थिति बनती है, उनके द्वारा उसे उचित समाधान करने का प्रयास किया जा रहा है।

6. दीक्षा समिति के उपाध्यक्ष श्री महेन्द्र जी कटारिया तथा मुमुक्षु समिति के उपाध्यक्ष श्री प्रमोद जी लोढ़ा, इनके कार्य साइलेन्टली होते है। इन कार्यो में उनके द्वारा शत प्रतिशत योगदान दिया जा रहा है।

7. वात्सलय निधि संयोजक श्री सुमतिचन्द जी मेहता अपने काम को बखूबी निभा

रहे हैं, वर्तमान में 203 परिवारों को प्रतिमाह सहयोग प्रदान किया जा रहा है।

8. शिक्षा समिति संयोजक श्री प्रमोद जी महनोत द्वारा संघ में सेवारत विद्वानों को समय वर्गीकरण के अनुसार संत-सतीवृन्द के अध्ययन में सहयोगी बनने हेतु व्यवस्था की जा रही है।
9. छात्रवृत्ति योजना संयोजक श्री हरीश जी कवाड़ द्वारा संघ के जरूरतमंद प्रतिभावान छात्र-छात्राओं को छात्रवृत्ति प्रदान करने हेतु इस योजना का कार्य व्यवस्थित रूप से संचालित किया जा रहा है।
10. पेशेवर समुदाय समिति के संयोजक श्री शेखर जी भंडारी द्वारा संघ के प्रोफेशनल गुरुभ्राताओं को एकत्रित कर संघहित में उपयोग लेने हेतु रूपरेखा बनाई गई है, जिसे शीघ्र ही क्रियान्वित करने का प्रयास किया जाएगा।
11. संघ के सभी क्षेत्रीय प्रधानों द्वारा अपने-अपने क्षेत्र में शाखाओं तथा चातुर्मास स्थलों पर सार-संभाल की जा रही है। अपने-अपने क्षेत्र में संघ की सभी गतिविधियों के प्रचार-प्रसार हेतु भी वे सन्नद्ध है।
12. सामायिक-स्वाध्याय निर्माण हेतु श्री प्रमोद जी लोढ़ा-जयपुर द्वारा विशेष प्रयास एवं सहयोग प्रदान किया जा रहा है। विशेष रूप से धन्यवाद देना चाहूंगा बैंगलोर संघ को तथा अध्यक्ष श्री पदमराज जी मेहता एवं उनकी पूरी टीम को जिन्होंने बैंगलोर में संघ के अमूल्य सामायिक-स्वाध्याय भवन का बहुत सुन्दर निर्माण करवाया है, जिसका उद्घाटन 07 अक्टूबर को हुआ।
13. संघ के दोनों हाथ के रूप में श्राविका मण्डल मंजू जी भंडारी के नेतृत्व में तथा रीढ़ की हड्डी के रूप में युवक परिषद् मनीष जी मेहता द्वारा उत्कृष्ट कार्य किये जा रहे हैं।
14. संघ की सभी सहयोगी संस्थाएं स्वाध्याय संघ, शिक्षण बोर्ड, संस्कार केन्द्र में संयोजक श्री सुभाष जी हुण्डीवाल, अशोक जी बाफना तथा राजेश जी कर्णावट के निर्देशन में अपने-अपने क्षेत्र में संघ की गरिमा को बढ़ाने हेतु प्रयासरत है।
15. वीर परिवार मेडिक्लेम का कार्य वीर पिता श्री बाबू धनपतजी सुराणा-चेन्नई देख रहे हैं। अभी तक 50 परिवारों की जानकारी प्राप्त हो चुकी है। आगे की कार्यवाही जारी हैं।-धनपत सेठिया, राष्ट्रीय महामंत्री

बेंगलुरु (कर्नाटक) में सामायिक–स्वाध्याय भवन का उद्घाटन एवं लोकार्पण

श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ (कर्नाटक) बेंगलुरु एवं श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ ट्रस्ट (कर्नाटक) बेंगलुरु के तत्त्वावधान में नवीनीकृत ट्रस्ट भवन एच.उत्तमचन्द प्रमिला भण्डारी सामायिक-स्वाध्याय भवन एवं जैन भवन का सोमवार, 07 अक्टूबर, 2019 को उद्घाटन हुआ, जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में संघ संरक्षक मण्डल के संयोजक श्री मोफतराजजी मुणोत-मुम्बई पधारे। समारोह की अध्यक्षता अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष न्यायमूर्ति श्री

प्रकाशचन्दजी टाटिया-जयपुर ने की। इस अवसर पर भवन के निर्माण में अर्थ सहयोगी सभी दानदाताओं का तथा प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से सहयोग प्रदान करने वाले सभी कार्यकर्त्ताओं को भी सम्मानित किया गया। मुख्य अतिथि श्री मोफतराजजी मुणोत एवं रत्नसंघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष न्यायमूर्ति श्री प्रकाशचन्दजी टाटिया ने सभा में उपस्थित सभी पदाधिकारियों, ट्रस्टियों एवं संघ सदस्यों को भवन निर्माण के लिए हार्दिक बधाई दी। भवन निर्माण के लिए विशेष प्रयासों के लिए बैंगलुरु संघ को धन्यवाद दिया। कार्यक्रम को सफल बनाने में श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ ट्रस्ट (कर्नाटक), बेंगलुरु, श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ (कर्नाटक), बेंगलुरु, श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल (कर्नाटक), बेंगलुरु एवं श्री जैन रत्न युवक परिषद् (कर्नाटक) बेंगलुरु का सहयोग रहा।-गौतमचन्द ओस्तवाल, मंत्री

नन्दूरबार में तपस्वी भाई–बहिनों का अभिनन्दन समारोह सम्पन्न

श्री जैन श्वेताम्बर स्थानकवासी संघ एवं श्री जैन रत्न युवक परिषद् के संयुक्त तत्त्वावधान में रविवार, दिनांक 20 अक्टूबर, 2019 को गिरिविहार वाड़ी, गिरिविहार सोसायटी में तपस्वीयों का अभिनन्दन समारोह आयोजित किया गया। इस अभिनन्दन समारोह में चातुर्मास में सम्पन्न हुई दीर्घ तपस्या करने वाले तपस्वियों का, रत्नसंघ में दीक्षित सतीवर्ग के वीर परिवारों का, नंदूरबार से अन्य संघों में दीक्षित संत-सतियों के वीर परिवारों का, विहार सेवा में जैनेतर लोगों द्वारा सेवा देने वाले सेवाभावियों का तथा जैन धर्म के मौलिक इतिहास पर आधारित प्रतियोगिता में भाग लेने वाले परीक्षार्थियों का अभिनन्दन किया गया। उपस्थित सभी महानुभावों ने सर्वप्रथम जिनशासन गौरव, परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा.की आज्ञानुवर्ती विदुषी महासती श्री सौभाग्यवतीजी म.सा. आदि ठाणा के दर्शन-वन्दन के लाभ के साथ प्रवचन श्रवण किया।

इस कार्यक्रम में अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष न्यायमूर्ति माननीय श्री प्रकाशजी टाटिया-जयपुर, कार्याध्यक्ष श्री आनन्दजी चौपड़ा-जयपुर, श्राविका मण्डल की राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष श्रीमती बीनाजी मेहता-जोधपुर, युवक परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री मनीषजी मेहता-जयपुर, कार्याध्यक्ष श्री अनिलजी बोथरा-जलगांव, शासन सेवा समिति के सदस्य एवं धुलिया संघ के अध्यक्ष श्री कांतिलालजी चोरडिया सहित नंदूरबार श्रीसंघ के पदाधिकारियों की महनीय उपस्थिति रहीं।

संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष न्यायमूर्ति श्री प्रकाशजी टाटिया का आशीर्वचन प्राप्त हुआ तथा कार्याध्यक्ष श्री आनन्दजी चौपड़ा ने भी उपस्थित महानुभावों को संघ की गतिविधियों के लिए प्रभावी प्रेरणा की। इस अवसर पर नंदरूबार में श्राविका संघ की नई शाखा का गठन किया गया। श्री जैन रत्न युवक परिषद्-नंदूरबार के सदस्यों की वेशभूषा आकर्षण का केन्द्र रही। संघ, श्राविका मण्डल एवं युवक परिषद् का उत्साह और जोश तारीफ के काबिल था। बाहर गांव से पधारे सभी आगन्तुक महानुभावों ने नंदूरबार संघ के समर्पण भाव की भूरी-भूरी प्रशंसा की। कार्यक्रम का सफल संचालन

श्री मनोजजी संचेती-जलगांव ने किया।

श्राविका मण्डल की नई शाखा का गठन

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल की कार्याध्यक्ष श्रीमती बीनाजी मेहता-जोधपुर, गुजरात की क्षेत्रीय प्रधान-सह-संयोजक श्रीमती प्रेमलता जी मेहता-उमरगांव रोड़ तथा गोटन शाखाध्यक्ष श्रीमती पूनमजी चौपड़ा सहित अन्य सदस्यों के द्वारा रविवार, 20-21 अक्टूबर, 2019 को महाराष्ट्र के अमलनेर, जलगांव, धुलिया, नन्दूरबार, कजगांव में प्रवास कार्यक्रम सम्पन्न किया गया।

महाराष्ट्र के नन्दूरबार और कजगांव क्षेत्र में श्राविका मण्डल की नई शाखा का गठन किया गया, जिसमें नन्दूरबार में सौ. रंजनाजी नगीनचन्दजी कांकरिया को अध्यक्ष, सौ. मनीषाजी निलेशजी कांकरिया को सचिव बनाया गया और कजगांव में सौ. रिंकूजी धारीवाल को अध्यक्ष तथा सौ. दर्शनाजी भण्डारी को सचिव मनोनित किया गया। प्रवास कार्यक्रम के दौरान महाराष्ट्र, गुजरात में संत-सती मण्डल के दर्शन-वन्दन, प्रवचन श्रवण का लाभ भी प्राप्त किया।-अलका दुधेड़िया, महासचिव

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् का 29वां राष्ट्रीय अधिवेशन संपन्न

उत्साह व उमंग के साथ 28 सितम्बर 2019 को पाली के मंडिया रोड स्थित जैन छात्रावास में युवक परिषद का 29वां राष्ट्रीय अधिवेशन सम्पन्न हुआ। दोपहर करीब 1:30 बजे आरम्भ हुए अधिवेशन में करीब 700-800 लोगों ने सम्मिलित होकर कार्यक्रम की शोभा बढ़ायी।

अधिवेशन का शुभारम्भ युवारत्न श्री उदित जी बांठिया के मंगलाचरण से हुआ। इस अवसर पर संघ संरक्षक मण्डल के संयोजक श्री मोफतराजजी मुणोत-मुम्बई, अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष न्यायमूर्ति श्री प्रकाशजी टाटिया, अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री मनीषजी मेहता, कार्याध्यक्ष श्री विवेक जी लोढ़ा, श्री अनिल जी बोथरा व महासचिव श्री अमित जी हीरावत उपस्थित थे। सर्वप्रथम युवक परिषद् के उपाध्यक्ष श्री राजीव जी नाहर ने श्री शैलेन्द्रजी मेहता का एवं उपाध्यक्ष श्री अंकित जी लोढ़ा ने रत्नसंघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष न्यायमूर्ति श्री प्रकाशचंदजी टाटिया का माला, शॉल एवं स्मृति चिन्ह द्वारा बहुमान किया।

तपस्या करने वालों का अभिनन्दन अतिथियों द्वारा किया गया। इसमें श्री मोहनलाल जी जैन, श्री महावीर जी जैन, श्री भवानीजी जैन, श्री अशोक जी सिंघवी, श्री तनसुखजी सांड व युवक परिषद के पूर्व अध्यक्ष श्री राजकुमार जी गोलेच्छा का अभिनन्दन चातुर्मास समिति के संयोजक रूपकुमारजी चौपड़ा, श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ पाली के अध्यक्ष श्री छगनलाल जी लोढ़ा, मंत्री श्री रजनीश जी कर्नावट व मंचासीन अतिथियों ने माला, शॉल एवं स्मृति चिन्ह से अभिनन्दन किया। अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् के उपाध्यक्ष श्री विकासजी जैन ने श्री मोफतराज

जी मुणोत का माला, शॉल एवं स्मृति चिन्ह से बहुमान किया। इसके बाद कार्याध्यक्ष श्री विवेक जी लोढ़ा ने शब्दों से अतिथियों का स्वागत किया।

अहमदाबाद से पधारे प्रो. शैलेन्द्र जी मेहता ने जैन धर्म के मर्म पर प्रकाश डालते हुए कहा कि जैन धर्म दुनिया का प्राचीनतम धर्म है। जैन धर्म उत्तम मोक्ष का मार्ग है। उन्होंने जैन धर्म की महिमा को समझाते हुए लोगों को अहिंसा, अपरिग्रह एवं अनेकान्तवाद के बारे में बताया। मेहता ने बताया कि बैंगलोर के सॉफ्टवेयर कंपनी के सी.ई.ओ. सत्येन नागल ने जीवन में कभी तेजी नहीं दिखायी, उन्होंने कहा कि कड़वी बात भी मिठास से कही जा सकती है। जैन धर्म वो खूबसूरत पथ है, जिससे व्यावहारिक जीवन को उपयोगी बनाया जा सकता है। उन्होंने उद्‌बोधन का समापन शायरी के साथ किया, जिसमें उन्होंने कहा कि-''**सोच को बदलो सितारे बदल जाएंगे, कश्तियां बदलने की जरूरत नहीं दिशा को बदलों, किनारे बदल जाएंगे**''।

सम्मान के अन्तर्गत धार्मिक शिक्षण शिविर के लिए सर्वश्रेष्ठ शाखा के रूप में जयपुर शाखा को एवं लघु शाखा के रूप में गंगापुरसिटी शाखा को सम्मानित किया गया। व्यसन मुक्ति के क्षेत्र में सर्वश्रेष्ठ शाखा के रूप में जलगांव शाखा को तथा लघु शाखा के रूप में बीजापुर शाखा को सम्मानित किया गया। विहार सेवा के लिए सर्वश्रेष्ठ शाखा के रूप में चेन्नई शाखा को एवं लघु शाखा के रूप में सूरत शाखा को सम्मानित किया गया। प्रत्येक माह सामुहिक पारिवारिक सामायिक आयोजन के लिए सर्वश्रेष्ठ शाखा के रूप में जोधपुर शाखा एवं लघु शाखा के रूप में सवाईमाधोपुर शाखा को सम्मानित किया गया। अनुकम्पा के क्षेत्र में अनुकरणीय सेवा के लिए जयपुर शाखा व जोधपुर शाखा को सम्मानित किया गया।

संघ संरक्षक मण्डल के संयोजक श्री मोफतराज जी मुणोत ने अपने उद्‌बोधन में फरमाया कि युवा संघ व समाज का गौरव होता है, आज का युवा संघ का भविष्य है। संघ की जान युवा है। संघ की दिशा को आगे ले जाने का दायित्व युवाओं पर है। अपरिग्रह की पालना में जैन धर्म सबसे आगे है। युवाओं को सकारात्मक सोच के साथ संघ के कार्यक्रमों से तत्परता के साथ जुड़ने की आवश्यकता है।

कार्यक्रम के दौरान मासखमण की तपस्या करने पर श्री कोशिक जी सुराणा, श्री भूषण जी कांकरिया व श्री बसंत जी मुथा का सम्मान किया गया। गत वर्ष वर्षीतप करने वालों में श्री पंकजजी लोढ़ा, श्री राजेशजी लोढ़ा, श्री कल्पेशजी लोढा, श्री नवरतनजी कांठेड़, श्री प्रकाशजी गांधी, श्री श्रेयांसजी गांधी का सम्मान किया गया। ग्रीष्मकालीन शिविर में सबसे ज्यादा फार्म भरवाने पर भोपालगढ़ शाखा को सम्मानित किया गया। इसी क्रम में महावीर नगर कोटा व बजरिया शाखा को भी सम्मानित किया गया। विशेष शाखा के रूप में हिण्डोन सिटी शाखा को सम्मानित किया गया।

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् के कार्याध्यक्ष श्री अनिल जी बोथरा ने अपने उद्‌बोधन में उपस्थित लोगों को क्यूफिक्स का महत्त्व बताया। युवक परिषद् एक महकता गुलदस्ता है, जैसे क्यूफिक्स आपस में जोड़ लगाती है उसी प्रकार जैन समाज के लोग भी आपसी मेलमिलाप से जुड़े।

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के अध्यक्ष न्यायमूर्ति श्री प्रकाशजी टाटिया ने अपने संबोधन में युवक परिषद् की टीम को धन्यवाद दिया व युवाओं को आह्वान किया कि वे योजनाओं की गति के लिए टेक्नोलॉजी की ओर बढ़े व संत-सती मंडल की सेवा को अपना दायित्व समझे।

युवक परिषद् के अध्यक्ष श्री मनीषजी मेहता ने युवक परिषद के एप्प को हर मोबाइल में डाउनलोड करने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि आप सब माह के अंतिम रविवार को परिवार सहित स्थानक में सामायिक करने का संकल्प ले। ज्यादा से ज्यादा अपने-अपने क्षेत्रों में युवा संघ की टीम का गठन करें। इस अवसर पर श्री मनीष जी मेहता ने सर्वश्रेष्ठ शाखा के रूप में पाली शाखा व लघु शाखा के रूप में पीपाड़ शाखा को सम्मानित करने की घोषणा की।

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् के अधिवेशन में राजस्थान के क्षेत्रिय प्रधान श्री नरपत जी चौपड़ा, अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के कार्याध्यक्ष श्री आनन्दजी चौपड़ा एवं श्री बुधमलजी बोहरा, महामंत्री श्री धनपतजी सेठिया, संयुक्त महामंत्री श्री प्रकाशजी सालेचा, कोषाध्यक्ष श्री बसंतजी जैन-मुम्बई, सह-कोषाध्यक्ष श्री लोकेन्द्रनाथजी मोदी, श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ पाली के अध्यक्ष श्री छगनलालजी लोढ़ा, मंत्री श्री रजनीशजी कर्नावट, चातुर्मास समिति के संयोजक श्री रूपकुमारजी चौपड़ा, श्री जैन रत्न युवक परिषद् पाली के अध्यक्ष श्री मनीषजी पगारिया, मंत्री श्री तरूणजी हिंगड़, श्री अरविंदजी चौपड़ा, श्री राजेशजी लोढ़ा, श्री सुदीपजी धारीवाल, श्री पंकजजी लोढ़ा व श्री धर्मेशजी रेड उपस्थित थे।

कार्यक्रम के अंत में युवक परिषद् के महासचिव श्री अमित जी हीरावत ने मंचासीन अतिथियों के साथ पाली संघ का धन्यवाद ज्ञापित करते हुए युवाओं को संघ से जुड़ने का आह्वान किया। साथ ही कार्यक्रम में पधारे सभी लोगों का आभार प्रकट किया। कार्यक्रम का सफल संचालन युवक परिषद् जोधपुर के अध्यक्ष श्री गजेन्द्रजी चौपड़ा ने किया।-अमित हीरावत, महासचिव

पाली में स्वाध्यायी गुणवत्ता अभिवर्द्धन शिविर सम्पन्न

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर द्वारा दिनांक 02 से 06 अक्टूबर, 2019 तक परम श्रद्धेय आचार्य प्रवर 1008 श्री हीराचन्द्रजी म.सा. आदि ठाणा 8 के पावन सान्निध्य में स्वाध्यायी गुणवत्ता अभिवर्द्धन शिविर पाली में आयोजित किया गया। दिनांक 02 अक्टूबर को सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल द्वारा आयोजित (दान का स्वरूप) विषय पर विद्वत संगोष्ठी में स्वाध्यायी भाई-बहिनों ने भाग लिया। दिनांक 03 अक्टूबर से शिविर दिनचर्या के अनुरूप प्रातः 5.30 से 06.30 राइय प्रतिक्रमण, 06.30 से 07.15 तक प्रार्थना एवं स्वाध्याय संघ के परामर्शदाता श्री प्रकाशचंद जी जैन, जयपुर का विशेष उद्बोधन हुआ। प्रातः 09.00 से 10.30 तक प्रवचन में भी प्रतिक्रमण, वक्तृत्व कला विषय पर संत भगवंतों के मुखारविन्द से सभी स्वाध्यायियों को अनमोल प्रवचन सुनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। प्रातः 10.45 से 11. 30 तक स्वाध्यायी भाई-बहिनों के पाठ्यक्रम के अनुसार श्रद्धेय श्री योगेशमुनिजी म.

सा. ने प्रतिक्रमण के 12 स्थूल के अतिचार के बारे में विशेष जानकारी सभी स्वाध्यायियों को प्रदान की। दोपहर 01.00 से 01.50 की कक्षा में श्रद्धेय श्री विनम्रमुनि जी म.सा. ने प्रतिक्रमण के पाठों का शुद्ध उच्चारण, स्थानकवासी परम्परा के अन्तर्गत रत्नसंघ परम्परा की जानकारी एवं अन्तगडदशांग सूत्र को रोचक बनाने के बारे में विशेष जानकारी प्रदान की। दोपहर 02.10 से 03.00 बजे तक तृतीय कालांश में महान अध्यवसायी सरस व्याख्यानी श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. ने सभी स्वाध्यायियों की जिज्ञासाओं का संतोषप्रद समाधान किया। चतुर्थ कालांश में विद्वान प्रशिक्षक श्री प्रकाशचंद जी जैन, जयपुर, श्री नवरतन जी भंसाली, बेंगलुरू, श्री धर्मचंद जी जैन (शिविर संयोजक) जोधपुर, श्री कन्हैयालाल जी जैन, भीलवाड़ा ने प्रतिक्रमण अन्तगडदशांग सूत्र एवं वक्तृत्व कला विषय पर सभी को विशेष जानकारी प्रदान की। रात्रिकालीन कक्षाओं में सभी स्वाध्यायी भाई-बहिनों को वक्तृत्व कला का अभ्यास कराया गया। शिविर में लगभग 65 शिविरार्थियों ने भाग लिया।

शिविर के अंतिम दिन शिविर समापन एवं स्वाध्याय संघ की कार्यशाला का आयोजन प्रवचन के पश्चात् प्रवचन हॉल में किया गया। कार्यक्रम का प्रारम्भ जयपुर सिद्धान्तशाला की छात्राओं द्वारा मंगलाचरण एवं गुरु गुणगान के साथ किया गया, तत्पश्चात् अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के संयुक्त महामंत्री श्री प्रकाश जी सालेचा ने कार्यशाला की प्रस्तावना रखी। स्वाध्याय संघ के संयोजक श्री सुभाष जी हुण्डीवाल, जोधपुर ने स्वाध्यायियों को स्वाध्याय संघ के आगामी कार्यक्रम एवं कार्य योजनाओं की जानकारी प्रदान की। वरिष्ठ प्रशिक्षक श्री प्रकाशचंद जी जैन, जयपुर ने सभी स्वाध्यायियों को अपने ज्ञान, ध्यान के साथ स्वाध्याय संघ को आगे बढ़ाने की बात रखी। शिविर में भाग लेने वाले स्वाध्यायी भाई-बहिनों ने अपने अनुभव प्रस्तुत किये तथा स्वाध्याय संघ के उत्थान एवं आगामी कार्यक्रम हेतु अपने आवश्यक सुझाव भी प्रस्तुत किये। सचिव श्री सुनील जी संकलेचा ने सभी पधारे हुए स्वाध्यायी भाई-बहिनों का एवं श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, पाली का स्वाध्यायियों के आवास, निवास, पुरस्कार एवं भोजन की समुचित व्यवस्था के लिये आभार प्रकट किया। कार्यक्रम का सफल संचालन श्री शुभम जी बोहरा, जलगांव द्वारा किया गया।-सुनील संकलेचा, सचिव

पाली में शिक्षण बोर्ड की कार्यशाला सम्पन्न

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड जोधपुर की परीक्षा सम्बन्धी गतिविधियों की समीक्षा करने हेतु दिनांक 06 अक्टूबर-2019 को सामायिक-स्वाध्याय भवन, सुराणा मार्केट पाली में कार्यशाला आयोजित की गई। इस कार्यशाला में पल्लीवाल, पोरवाल, जोधपुर, जयपुर, मेवाड़, मारवाड़, इन्दौर, होशियारपुर, खेड़ब्रह्मा (गुजरात) आदि क्षेत्रों के 125 महानुभावों ने भाग लिया।

इस कार्यशाला में रत्नसंघ के अष्टम् पट्टधर, प्रवचन प्रभाकर, आगम रत्नाकर, परम श्रद्धेय आचार्य श्री 1008 श्री हीराचन्द्रजी म.सा., महान् अध्यवसायी श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनि जी म.सा. आदि ठाणा के दर्शन-वन्दन एवं प्रवचन श्रवण का लाभ भी प्राप्त हुआ।

कार्यशाला दिनांक 06.10.2019 को दोपहर 1:30 बजे से सामायिक स्वाध्याय भवन प्रवचन स्थल पर प्रारम्भ हुई। इस कार्यशाला में शिक्षण बोर्ड के संयोजक श्री अशोक जी बाफना-चैन्नई, श्रावक संघ के संयुक्त महामंत्री श्री प्रकाशजी सालेचा-जोधपुर, वरिष्ठ प्रशिक्षक श्री प्रकाशचन्द जी जैन-जयपुर, स्वाध्याय संघ के संयोजक श्री सुभाष जी हुण्डीवाल, शिक्षण बोर्ड के कोषाध्यक्ष श्री गौतमजी जीरावला, पाली संघ के अध्यक्ष श्री छगनमल जी लोढ़ा, चातुर्मास समिति के संयोजक श्री रूपकुमार जी चौपड़ा ने मंच को सुशोभित किया।

मंगलाचरण शिक्षण बोर्ड के रजिस्ट्रार श्री धर्मचन्द जी जैन ने किया। अतिथियों का स्वागत शिक्षण बोर्ड के संयोजक श्री अशोक जी बाफना द्वारा किया गया। कार्यशाला में निरीक्षकों, अधीक्षकों, प्रश्न-पत्र निर्माताओं तथा वरिष्ठ स्वाध्यायी के रूप में पधारे हुए भाई-बहिनों को परीक्षा सम्बन्धी कार्यों में सजगता, सक्रियता एवं गुणवत्ता लाने हेतु श्री प्रकाशजी सालेचा, श्री प्रकाशचन्द जी जैन, श्री सुभाषजी हुण्डीवाल ने सारगर्भित शब्दों में प्रभावी प्रेरणा प्रदान की।

परीक्षा सम्बन्धी निम्नांकित विषयों पर चर्चा-वार्ता की गई-1. निरीक्षक व्यवस्था सम्बन्धी, 2. अधीक्षक सक्रियता सम्बन्धी, 3. नकल रोकने सम्बन्धी, 4. प्रश्न-पत्र निर्माण सम्बन्धी, 5. प्रोत्साहन पुरस्कार सम्बन्धी, 6. परीक्षा परिणाम सम्बन्धी, 7. आवेदन-पत्र भरवाने सम्बन्धी, 8. पाठ्यक्रम सम्बन्धी, 9. प्रचार-प्रसार सम्बन्धी, 10. कार्यालय व्यवस्था सम्बन्धी। इन विषयों पर वर्तमान व्यवस्था की विस्तृत जानकारी शिक्षण बोर्ड के रजिस्ट्रार एवं कार्यक्रम संचालक श्री धर्मचन्दजी जैन ने प्रदान की। एक-एक विषय से सम्बन्धित सुझाव आमंत्रित किये गये।

शिक्षण बोर्ड परीक्षा सम्बन्धी गतिविधियों के सुधार हेतु सुंदरलालजी सालेचा-जोधपुर, चंचलमलजी बोथरा-जोधपुर, जगदीशमलजी कुम्भट-जोधपुर, लक्ष्मीचंदजी भण्डारी-ब्यावर, महावीरप्रसादजी-अलवर, नरेशजी जैन-नदबई, राजेश जी बोहरा-जोधपुर, जम्बूकुमारजी जैन-जयपुर, नरेशजी बागरेचा-जोधपुर, किरणजी जैन-होशियारपुर, कमलेशजी मेहता-जोधपुर, सुशीलाजी बोहरा-जोधपुर, रणजीतसिंह जी पीपाड़ा-इंदौर, धर्मेन्द्रजी जैन-सवाई माधोपुर, राजकुमारजी जैन-कोटा, दिनेशजी खिंवसरा-जोधपुर, सुनीलजी संकलेचा-जोधपुर, महेन्द्रजी जैन-जयपुर आदि महानुभावों ने अनेक उपयोगी सुझाव प्रस्तुत किये। प्राप्त सुझावों का अध्ययन कर यथासंभव उन्हें लागू करने हेतु शिक्षण बोर्ड प्रयासरत रहेगा, ऐसा विश्वास उपस्थित सभी महानुभावों को दिलाया गया।

कार्यशाला में पधारे सभी महानुभावों को महान् अध्यवसायी श्रद्धेय श्री महेन्द्र मुनिजी म.सा. एवं श्रद्धेय श्री योगेशमुनिजी म.सा. ने ज्ञान की महत्ता, परीक्षाओं की उपयोगिता, संघ-सेवा में समर्पणता आदि विषयों पर मार्मिक उद्‌बोधन फरमाने की कृपा की।

कार्यशाला में पधारे सभी महानुभावों के भोजन, चाय, नाश्ता आदि की समुचित व्यवस्था के साथ ही उपस्थित सभी महानुभावों को पाली संघ की ओर से स्मृति

चिह्न प्रदान कर सम्मानित किया गया।

जुलाई-2018 की परीक्षा में सर्वश्रेष्ठ उपस्थिति एवं परीक्षा परिणाम के आधार पर निम्नांकित तीन केन्द्रों के अधीक्षकों को शिक्षण बोर्ड की ओर से पुरस्कार प्रदान कर सम्मानित किया गया- 1. श्री मोहनलालजी जीरावला- शक्तिनगर, जोधपुर, 2. श्री दिलीपजी जैन- बजाज नगर सिद्धान्तशाला, जयपुर, 3. श्री महेन्द्रजी जैन- महावीर भवन, शहर सवाई माधोपुर।

उपस्थित सभी महानुभावों को शिक्षण बोर्ड की ओर से धन्यवाद के साथ कार्यशाला समाप्त की गई। कार्यशाला का संचालन शिक्षण बोर्ड के रजिस्ट्रार श्री धर्मचन्द जी जैन- जोधपुर द्वारा किया गया।-सुभाषचन्द नाहर, सचिव

शिक्षण बोर्ड की थोकड़ों की परीक्षा 05 जनवरी को

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर द्वारा जैनागम स्तोक वारिधि (थोकड़ों की परीक्षा) कक्षा 1 से 11 तक की परीक्षा रविवार, 05 जनवरी, 2020 को दोपहर 12.30 से 3.30 बजे तक आयोजित की जायेगी।

तत्त्वज्ञान के रसिक भाई-बहिनों से विनम्र अनुरोध है कि थोकड़ों की इस परीक्षा में अवश्य भाग लें। आवेदन-पत्र, पुस्तकें, परीक्षा सम्बन्धी अन्य जानकारी के लिए सम्पर्क करें- 1. अशोक बाफना, संयोजक- 094442-70145, 2. सुभाष नाहर, सचिव- 094132-02678, 3. शिक्षण बोर्ड कार्यालय- सामायिक-स्वाध्याय भवन, नेहरु पार्क, जोधपुर-342003 (राज) 291-2630490।-सुभाष नाहर, सचिव

अ.भा.श्री जैन रत्न आ.संस्कार केन्द्र,जोधपुर के बढ़ते चरण

मारवाड़ क्षेत्र (गोटन, भोपालगढ़ एवं बारनी) के पदाधिकारियों के साथ विचार विमर्श

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक संस्कार केन्द्र, जोधपुर के तत्वावधान में पदाधिकारियों द्वारा दिनांक 10.10.2019 को आध्यात्मिक प्रचार-प्रसार कार्यक्रम के अन्तर्गत श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, गोटन में पदाधिकारियों के साथ बैठक आयोजित की गई। बैठक में संस्कार केन्द्र के सचिव श्री राजेशजी भण्डारी, सह-सचिव श्री सुरेन्द्रकुमारजी कुम्भट के साथ श्री सुभाषजी हुण्डीवाल, संयोजक श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ एवं गोटन के श्रावकरत्न श्री ओमप्रकाशजी ओस्तवाल, श्री हंसराजजी चौपड़ा एवं अन्य वरिष्ठ श्रावक-श्राविकाऐं उपस्थित थे। गोटन में दैनिक धार्मिक पाठशाला एवं रविवारीय संस्कार शिविर खोलने हेतु प्रेरणा की गई। इस हेतु श्री राजेशजी भण्डारी ने उपस्थित पदाधिकारियों को रत्नसंघ परिवार में छोटे बच्चों के नाम एवं संख्या की जानकारी प्रदान करने का आग्रह किया। मीटिंग का परिणाम यह रहा कि दिनांक 13.10.2019 से नियमित रविवारीय संस्कार शिविर शुरू करने का निर्णय लिया गया जिस पर श्री ओमप्रकाशजी ओस्तवाल ने प्रायोजक के रूप में आगे आकर कहा कि रविवारीय शिविर हेतु मैं अपनी तरफ से पुरस्कार की व्यवस्था करूंगा। शिविर में अध्यापन का कार्य सुश्री ममताजी ओस्तवाल एवं सुश्री पायलजी चौपड़ा द्वारा करवाया जायेगा। अन्त में सभी उपस्थित सदस्यों का सचिव महोदय ने आभार व्यक्त किया।

संस्कार केन्द्र के पदाधिकारियों द्वारा भोपालगढ़ पाठशाला का आकस्मिक निरीक्षण किया गया। उसी दिन शाम को 6.00 बजे संघ शाखा भोपालगढ़ के पदाधिकारियों के साथ बैठक आयोजित की गई। जिसमें श्री नेमीचंदजी कर्नावट, श्री भंवरलालजी पींचा, श्री अनराजजी वैद, श्री अजीतराजजी मुथा, श्रीमती कंचनजी मूथा, श्री सोहनलालजी बोथरा, श्रीमती हेमलताजी जैन एवं अन्य सदस्यगण उपस्थित थे। संस्कार केन्द्र के सचिव श्री राजेशजी भण्डारी ने भोपालगढ़ पाठशाला के बच्चों की संख्या में अभिवृद्धि हो इसके लिए उन्होंने स्थानीय संघ के पदाधिकारियों को प्रेरणा की। श्री गौतमचन्दजी जैन ने प्रत्येक रविवार को पुरस्कार देने की भावना व्यक्त की। श्रीमती कंचनजी मूथा व श्री नेमीचंदजी कर्नावट को माह में एक-एक बार पाठशाला का निरीक्षण का कार्य सोंपा गया। धन्यवाद के साथ बैठक समापन की घोषणा हुई।

बारनी में व्याख्यात्री महासती श्री सोहनकंवरजी म.सा. की प्रेरणा से नई पाठशाला शुरू की गई, जिसमें अधिकांश बच्चे वीर परिवार से हैं। जिसमें श्री ऐवन्तजी सिंघवी एवं श्री कुलदीप सिंह जी अध्यापन का कार्य करेंगे। इसके लिए बारनी बैठक में उपस्थित कार्यकर्ताओं को संस्कार केन्द्र के सचिव महोदय द्वारा धन्यवाद दिया गया।

संस्कार केन्द्र द्वारा आयोजित एकदिवसीय कार्यशाला सानन्द सम्पन्न

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक संस्कार केन्द्र जोधपुर द्वारा अध्यापकों एवं निरीक्षकों की गुणवत्ता में अभिवृद्धि के लिए एक दिवसीय कार्यशाला दिनांक 20 अक्टूबर, 2019 को जैन भवन, नेहरू पार्क, सरदारपुरा, जोधपुर में दोपहर: 01:00 बजे आयोजित की गई। कार्यक्रम में संस्कार केन्द्र के सचिव-श्री राजेशजी भण्डारी, सह-सचिव-श्री सुरेन्द्रकुमारजी कुम्भट, कोषाध्यक्ष-श्री संजयजी सुराणा, अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जोधपुर के संयुक्त महामंत्री-श्री प्रकाशचन्दजी सालेचा, श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जोधपुर के अध्यक्ष-श्री सुभाषजी गुन्देचा, श्री जैन रत्न युवक परिषद्, जोधपुर के अध्यक्ष-श्री गजेन्द्रजी चौपड़ा, श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल जोधपुर की अध्यक्ष-श्रीमती सुमनजी सिंघवी, सचिव-श्रीमती काजलजी जैन, श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर के संयोजक-श्री सुभाषजी हुण्डीवाल, सचिव-श्री सुनिलजी संकलेचा, अ.भा.श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर के सचिव-श्री सुभाषजी नाहर, श्री पारसजी मुथा क्षैत्रीय प्रधान (मारवाड़ क्षेत्र) उपस्थित थे। कार्यक्रम की शुरूआत श्री धर्मचन्दजी जैन के मंगलाचरण से हुई तथा पधारे हुए श्रावक-श्राविकाओं, अध्यापकों व निरीक्षकों का स्वागत किया गया। तत्पश्चात श्री धर्मचन्दजी जैन-रजिस्ट्रार ने 'अध्यापक निर्देशिका' पुस्तक से सभी अध्यापकों को आवश्यक जानकारी एवं दिशा-निर्देश प्रदान करने के साथ अध्यापिकाओं को किस प्रकार अध्ययन करवाना है, शब्दों का शुद्धिकरण के साथ उच्चारण किस प्रकार करना है, उपस्थिति-पत्रक, प्रगति-पत्रक को कैसे पूर्ण भरना है, बच्चों को सामायिक वेशभूषा में आने, पंक्तिवार/कक्षावार बैठने पर जोर दिया गया। सचिव महोदय द्वारा भी अध्यापिकाओं/निरीक्षकों को आवश्यक निर्देश

दिये गये। इस कार्यक्रम में पाठशालाओं में बच्चों की संख्या में अभिवृद्धि हेतु ''डोर टू डोर अभियान'' को चलाने पर भी चर्चा की गई। अध्यापकों / निरीक्षकों से संस्कार केन्द्र को व्यवस्थित चलाने के लिए सुझाव भी लिये गये, जिनको यथासंभव क्रियान्वित करने का विश्वास दिलाया गया। कार्यशाला में जोधपुर व मारवाड़ क्षेत्र के लगभग 71 अध्यापक व 2 निरीक्षक सहित लगभग 110 महानुभावों ने भाग लिया।

कार्यशाला में सहभागियों के लिए अल्पाहार व भोजन की व्यवस्था श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, नेहरू पार्क, जोधपुर द्वारा की गई। जिसके लिए सचिव महोदय द्वारा संयोजक श्री प्रकाशजी चौपड़ा एवं उनकी टीम को धन्यवाद दिया। सचिव महोदय ने पदाधिकारियों, कार्यकर्त्ताओं, अध्यापकों व निरीक्षकों का आभार व्यक्त किया।

कार्यशाला में उपस्थित हुए संस्कार केन्द्र के सभी अध्यापकों / निरीक्षकों एवं अन्यों को संस्कार केन्द्र, जोधपुर द्वारा पुरस्कार प्रदान कर सम्मानित किया गया। -राजेश भण्डारी, सचिव

बहु–बालिका मण्डल शिविर एवं वार्षिक संगोष्ठी सम्पन्न

श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल, जोधपुर द्वारा 18 अगस्त से 20 अगस्त तक तीन दिवसीय बहु-बालिका शिविर का आयोजन शक्ति नगर स्थानक में परम श्रद्धेय पं. रत्न उपाध्यायप्रवर पण्डितरत्न श्री मानचंद्रजी म.सा. आदि ठाणा 5 के सान्निध्य में किया गया। जिसमें 60 बहनों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया तथा शिविर के अंत में मधुरव्याख्यानी श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा. ने शिविर में उपस्थित बालिकाओं व बहनों से पर्युषण में 500 तेले करने की प्रेरणा की। उनकी प्रेरणा से पर्युषण में 500 से ज्यादा तेले हुए।

श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल-जोधपुर द्वारा दिनांक 14 सितम्बर 2019 को प्रातः 9 बजे से वार्षिक संगोष्ठी का आयोजन सामायिक स्वाध्याय भवन, नेहरु पार्क में किया गया। कार्यक्रम का शुभारम्भ श्राविका सीमाजी भण्डारी के मंगलाचरण से हुआ। पावटा श्राविका मण्डल द्वारा स्वागत गीत प्रस्तुत किया गया, तत्पश्चात श्राविका मण्डल द्वारा आयोजित विभिन्न गतिविधियों की रिपोर्ट सचिव श्रीमती काजलजी जैन द्वारा प्रस्तुत की गई। ज्ञानार्जन के लिये प्रश्नोतरी श्रीमती उषाजी बोहरा द्वारा प्रस्तुत की गई। मिशन-251 (यतना से करें कर्मो की निर्जरा) पर श्री तरूणजी बोहरा का उद्बोधन हुआ जिसमें उन्होंने कहा कि यतना से हमें आश्रव से संवर की ओर आना है। सावधानी में ही निर्जरा है। मिशन-251 के अंतर्गत श्राविका मण्डल द्वारा 251 घरों को यतना युक्त बनाने का लक्ष्य है। जिसमें श्राविका मंडल द्वारा यतना हेतु सभी उपकरण उपलब्ध कराये जायेंगे। संगोष्ठी में तपस्वियों को सम्मानित किया गया। उसके पश्चात अध्यक्ष श्रीमती सुमनजी सिंघवी द्वारा धन्यवाद ज्ञापित किया गया।

-काजल जैन, सचिव

श्राविका मण्डल, जोधपुर की गतिविधियाँ प्रगति की ओर

1. मिशन-251 ''यतना से करे कर्मो की निर्जरा'' यह प्रोजेक्ट लगभग एक वर्ष का

है। इसमें हम घर-घर जाकर लगभग 251 घर तैयार करेंगे।

2. भक्तामर स्तोत्र की परीक्षा का सातवां पेपर दिनांक 09 अक्टूबर, 2019 को हुआ, जिसमें भक्तामर की 25 से 28 गाथा की परीक्षा ली गई। इसमें लगभग 90 श्राविकाओं ने भाग लिया।
3. सितम्बर माह में सभी क्षेत्रों में लगभग 5000 सामायिक हुई।
4. उपाध्यायप्रवर श्रद्धेय श्री मानचन्द्रजी म.सा. एवं मधुरव्याख्यानी श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा. आदि ठाणा के पावन सान्निध्य में दिनांक 12-13 अक्टूबर, 2019 को शक्तिनगर स्थानक में दो दिवसीय बालिका शिविर का आयोजन किया गया। **"To Be Happy, To Be Strong"** विषय पर विशिष्ट प्रशिक्षिका श्रीमती अस्मिताजी देसाई-राजकोट द्वारा प्रशिक्षण प्रदान किया गया, जिसमें लगभग 100 से अधिक बालिकाओं ने भाग लिया।
5. 13 अक्टूबर, 2019 को शरद पूर्णिमा के अवसर पर श्राविका मण्डल द्वारा महासती श्री चन्द्रकलाजी म.सा. के सान्निध्य में 15-15 रात्रिकालीन सामायिक का आह्वान किया गया, जिसमें 80 श्राविकाओं ने भाग लिया। -सुमन सिंघवी, अध्यक्ष

स्वधर्मी वात्सल्य के तहत पुण्य पेटी की स्थापना

श्रावकरत्न श्री केवलमलजी कोठारी, जोधपुर, अपने निरन्तर प्रयासों के साथ हमारे घरों में आवश्यक/अनावश्यक सामग्री जो हमारे उपयोग में नहीं आ रही हैं, उस सामग्री को एकत्रित कर अपने सहयोगियों से उसे व्यवस्थित करा कर जरुरतमंद लोगों को वितरण करने का कार्यक्रम सूर्य नगरी जोधपुर में कई वर्षों से करते आ रहे हैं। उनके सद्प्रयासों से अनेक भाई-बहिन लाभान्वित हो रहे हैं। उनके निवेदन पर इस वर्ष सामायिक-स्वाध्याय भवन, शक्तिनगर एवं सामायिक-स्वाध्याय भवन नेहरु पार्क में पुण्य पेटी रखी गई, जिसमें अनेक महानुभावों ने अपने-अपने घरों से कपड़े, खाने-पीने का सामान, दवाइयाँ, स्टेशनरी इत्यादि अनेक सामान पेटी में डाल कर पुण्य का अर्जन किया। पेटी भर जाने पर कार्यकर्त्तागण उस सामान को व्यवस्थित करने के साथ जरूरतमंद लोगों को वितरित कर रहे हैं। इस कार्य में शक्तिनगर से श्री अशोकजी कोचर-मेहता एवं उनकी टीम तथा नेहरुपार्क से श्री राजेशजी चोरडिया एवं उनकी टीम सक्रियता के साथ सहयोग प्रदान कर रहे हैं।

अ. भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ को प्राप्त साभार

50000/-श्रीमती प्रभा-हरीशजी कवाड़-पुन्नमल्लै-चेन्नई, अपनी सुपुत्री सौ. दक्षा कवाड़ (सुपौत्री श्रीमती चंचलबाईजी-स्व. श्री मांगीलालजी कवाड़) का शुभ-विवाह चि. करणजी बाघमार के साथ सानन्द सम्पन्न होने के उपलक्ष्य में रत्नम् हेतु सप्रेम भेंट।

11000/-श्रीमती अंजुजी धर्मपत्नी श्री प्रवीणजी मोहनोत, जोधपुर-मुम्बई, सहयोगार्थ।

5100/- श्री ऋषभजी, जीतजी, शीतलजी जैन, जलगांव, संघ सहयोगार्थ।

5000/- श्रीमती रामकन्याजी धर्मपत्नी स्व. श्री मोतीलालजी जैन, श्री चन्द्रप्रकाशजी, दिनेशजी, जितेशजी, नितेशजी, सौरभजी जैन, चौथ का बरवाड़ा, सवाईमाधोपुर, जीवदया हेतु।

5000/- श्री अक्षतजी, आरवजी, हर्षितजी मेहता, जोधपुर, जीवदया हेतु।

5000/- श्री सागरमलजी, महावीरचन्दजी, श्रीमती प्रकाशदेवीजी छाजेड़, अडियार, चेन्नई, संघ सहयोगार्थ।

2500/- श्री पारसमलजी, पवनकुमारजी, श्रेयांशकुमारजी, नमनकुमारजी सुखाणी, रायचूर, संघ सहयोगार्थ।

2200/- श्रीमती अमरावबाईजी भण्डारी, शांतिलालजी भण्डारी, रायचूर, संघ सहयोगार्थ।

2200/- श्री प्रसन्नमलजी, कंचनकंवरजी फोफलिया, जोधपुर, सुश्रावक श्री रंगरूपमलजी फोफलिया का दिनांक 31 अगस्त, 2019 को स्वर्गवास होने पर उनकी पावन स्मृति में जीवदया हेतु।

2100/- श्रीमती पुष्पाजी खिंवसरा, जोधपुर, सहयोगार्थ।

2100/- श्री लुणकरणजी बेंताला, नागौर, सहयोगार्थ।

2100/- श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, हैदराबाद, संघ-सहयोगार्थ।

2100/- श्री अमितजी-श्रीमती स्नेहजी जैन, कोटा, अपने सुपुत्र समकित जैन के 29 मई, 2019 को छठे जन्मदिवस के उपलक्ष्य में।

1300/- श्री पारसमलजी सुपुत्र स्व. श्री मगराजजी ढेलड़िया-बोहरा, मण्डली, बाड़मेर (राज.), जीवदया हेतु।

1200/- श्रीमती मीमादेवीजी धर्मसहायिका श्री पारसमलजी ढेलड़िया-बोहरा, मण्डली, बाड़मेर (राज.), जीवदया हेतु।

1100/- श्री धर्मचन्दजी, कमलकुमारजी, संजयकुमारजी पीयूषजी मेहता, दूदू, जयपुर (राज.) जीवदया हेतु।

1100/- श्री जय जिनेन्द्रजी जैन, जोधपुर, जीवदया हेतु।

1100/- श्री पारसमलजी, महावीरचन्दजी बागरेचा, सूरत, जीवदया हेतु।

1100/- श्री पारसमलजी, विमलाजी, सुखाणी, रायचूर, अपने सुपौत्र श्री श्रेयांस सुपुत्र श्री पवनजी-मेघाजी सुखाणी के जन्मदिवस के उपलक्ष में भेंट।

1100/- श्री विवेकजी, गौतमजी चोरडिया, चेन्नई, सहयोगार्थ।

1000/- श्री महावीर जी जैन, जलगांव, संघ सहायता।

501/- श्री भीकमचन्दजी हीरालालजी दुग्गड़, वरोरा, संघ सहायता।

500/- श्री प्रकाशजी मिश्रीमलजी सुराणा, जोधपुर, जीवदया हेतु।

500/- श्रीमती कंचनजी मेहता, जोधपुर, जीवदया हेतु।

500/- श्री गुलाबसिंहजी चौधरी, भीलवाड़ा, जीवदया हेतु।

500/- श्री सुभाषजी-वंदनाजी भण्डारी, दुबई, पुत्र श्री प्रतीकजी भण्डारी के अल्पायु (31 वर्ष) में कोरियन कम्पनी में निदेशक पद पर पदोन्नति होने पर।

500/- श्री ललितकुमारजी जैन, मलपुरा, आगरा, संघ सहायतार्थ।

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर को प्राप्त साभार

21000/- श्रीमती सुशीला जी गुलेच्छा, जोधपुर, अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जोधपुर द्वारा पाली में आयोजित गुणी अभिनंदन कार्यक्रम में वरिष्ठ महिला स्वाध्यायी का सम्मान प्राप्त होने पर।

3100/- श्री नवरतनमल जी दुग्गड़, होसुर, संघ सहयोग।

3000/- श्रीमती चंद्रा लक्ष्मीमलजी सिंघवी, जोधपुर, साहित्य प्रकाशन हेतु

2100/- श्री हस्तीमल जी समदड़िया, संघ सहयोग।

2100/- श्री राजेन्द्र जी बोहरा, होसुर, संघ सहयोग।

2100/- श्री मोतीलाल जी जैन, होसुर

2100/- श्री हस्तीमल जी डोसी, मेड़ता सिटी, हिण्डौन सिटी में पर्युषण सेवा देने के उपलक्ष में संघ सहयोग।

2100/- श्री शांतिमल जी जौहारमल जी मेहता, जोधपुर, संघ सहयोग।

2100/- श्री भागचंद जी ओस्तवाल, चाकसू, पर्युषण संघ सहयोग।

2100/- श्री शीतल जी ओस्तवाल, चाकसू, पर्युषण संघ सहयोग।

2100/- श्रीमती विजयलक्ष्मी जी जैन, सवाई माधोपुर, अपने धर्मसहायक श्री प्रेमबाबू जी जैन के 31 जुलाई, 2019 को व्याख्याता पद से सेवानिवृत्त होने पर।

2100/- श्री पारसमलजी पवनकुमारजी सुखाणी, रायचुर, संघ सहयोग।

2000/- श्री रवि नरेन्द्र जी मुणोत, मुम्बई, संघ सहयोग।

2000/- श्री एस.एस. जैन संघ, कडल्लुर, साहित्य प्रकाशन हेतु।

1100/- श्री धर्मचंदजी कमलकुमारजी संजयकुमारजी पीयूषजी मेहता, दूदू, संघ सहयोग।

1100/- श्री विनोद जी जैन, चाकसू, पर्युषण सहयोग।

1100/- श्री सतीश जी ओस्तवाल, चाकसू, पर्युषण सहयोग।

500/- श्री कमलेश जी मेहता, पाली, सहयोग।

500/- श्री अशोक जी सिंघवी, जोधपुर, सहयोग।

500/- श्री राजेन्द्रकुमारजी महेन्द्रजी जैन, अलीगढ़-रामपुरा, पू. पिताजी स्व. श्री चौथमलजी जैन की पुण्य स्मृति में।

500/- श्री प्रसन्नमलजी फोफलिया, जोधपुर, सुश्रावक श्री रंगरूपमलजी फोफलिया का 31 अगस्त, 2019 को स्वर्गवास होने पर उनकी पावन स्मृति में।

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ को प्राप्त पर्युषण सहयोग

31,000/-	मुम्बई	21,000/-	हालोल
21,000/-	बजरिया	21,000/-	कोलकाता

21,000/-	पल्लीपेट	11000/-	पोलुर
11000/-	रालेगांव	10,000/-	कानपुर
7100/-	आरकाट	5100/-	तिरूमच्छी
5100/-	वेलुर	5100/-	वलसरवाक्कम
5100/-	हिण्डौन सिटी	5100/-	मादावरम
5100/-	निगुम्बाक्कम	5100/-	तिरूपति
5100/-	पाच्यावाला	5100/-	मावली
5000/-	सतारा	5000/-	होसुर
5000/-	कडल्लुर	5000/-	कराईकाल
5000/-	मिरसाहिबपेठ	4200/-	कृष्णागिरी
4100/-	सिलवासा	4000/-	गुडवांचरी
3100/-	सुलूरपेट	3100/-	तिनान्नुर
3100/-	कालाडीपेट	3100/-	आवड़ी
2200/-	वालाजाबाद	2101/-	महावीरनगर (स.मा.)
2100/-	देई	2100/-	बारनी खुर्द
2100/-	भोपालगढ़	2100/-	बाड़मेर
2100/-	अन्नानगर	2100/-	चिदम्बरम
2100/-	कोलीडम	2100/-	पेरंगलतुर
2100/-	पोरूर	2100/-	पुलियान्ततोप
2100/-	विद्याधर नगर, जयपुर	2100/-	दूदू
2100/-	अलीगढ़	2100/-	नीमच सिटी
2100/-	बागली	2000/-	पारसोली
1500/-	दूणी	1100/-	कडम्बातुर
1100/-	नल्लीकुप्पम	1100/-	देवली
1100/-	आजाद नगर, भीलवाडा	1000/-	कालूखेड़ा
500/-	पचाला	500/-	भराडी
500/-	मुकटी		

अ. भा. श्री जैन रत्न आ. शिक्षणबोर्ड को प्राप्त साभार

10000/-श्रीमती निलिमा-राजेन्द्रजी भंसाली, सरस्वतीनगर, जोधपुर, पुस्तक प्रकाशन हेतु।

2200/-श्री दिलखुशराजजी जैन, गोरेगाँव-मुम्बई, अगस्त, सितम्बर-2019 हेतु सहयोगार्थ।

अ.भा. श्री जैन रत्न आ. संस्कार केन्द्र को प्राप्त साभार

93000/-श्री सोहनलालजी बाघमार, बुद्धमलजी बाघमार, संजनाजी बाघमार, सुरेशकुमारजी चौधरी, विकासकुमारजी चौधरी, मैनाबाईजी बाघमार,

अभिषेकजी बाघमार, पूजाजी बाघमार, रोहितजी बाघमार, सौरवजी बाघमार, अखिलेशजी बाघमार, दिव्याजी बाघमार, सेजलजी बाघमार, चंचलजी बाघमार, सम्पतराजजी बाघमार, आशादेवीजी बाघमार, रंजनजी बाघमार, बिन्दूजी बाघमार, कंचनजी चौधरी, खुशबूजी चौधरी, रोहितजीचौधरी, नविताजी चौधरी, रेहानजी चौधरी, रमेशकुमारजी चौधरी, संतोषजी चौधरी, किर्तीजी चौधरी, गौतमजी चौधरी, अंकितजी चौधरी, महावीरचंदजी चौधरी, पदमचंदजी चौधरी, भावेशजी चौधरी-मैसूर, चम्पालालजी मकाणा, ललितकुमारजी मकाणा, अमितकुमारजी मकाणा, अभिषेकजी मकाणा, मंजूजी मकाणा, अक्षयजी मकाणा, निशाजी मकाणा, आदर्शजी मकाणा, अखिलेशजी मकाणा, आदित्यजी मकाणा, सज्जनीबाईजी मकाणा, हेमलताजी मकाणा, कविताजी मकाणा, आलोक जी मकाणा, दौड़बालापुर, सुजीतकुमारजी मकाणा।

17000/- श्री प्रवीण कुमारजी, पदमा जी, मनोज जी, शैलेष जी, रक्षिता जी, सिद्धार्थ जी संकलेचा, कुम्भकोणम, चैन्नई, पूज्य मातुश्री श्रीमती सुशीला जी संकलेचा की पावन स्मृति में।

4950/- श्री नवरतनमलजी डागा, पुनीतजी डागा, श्री कविशजी डागा, जोधपुर, सहयोगार्थ।

2000/- श्री कैलाशजी मेहता, जोधपुर, सहयोगार्थ।

1100/- श्री प्रसन्नमलजी फोफलिया, जोधपुर, सुश्रावक श्री रंगरूपमलजी फोफलिया का 31 अगस्त, 2019 को स्वर्गवास होने पर उनकी पावन स्मृति में।

गजेन्द्रनिधि द्वारा आचार्य हस्ती स्कॉलरशिप फण्ड

(अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् द्वारा क्रियान्वित)

100000/-श्रीमती रसिलादेवीजी कांकरिया, रायगंज (पश्चिम बंगाल), सहयोगार्थ।

50000/- श्री सोहनलालजी महावीरचन्दजी बोथरा (भोपालगढ़ वाले), जलगांव, सहयोगार्थ।

30000/- श्री सोहनराजजी, कुशलचन्दजी, हेमन्तजी बाघमार, कोयम्बटूर, श्रीमती महालक्ष्मी जी धर्मपत्नी श्री हेमन्तजी बाघमार (पुत्रवधु श्री सोहनराजजी बाघमार) के अठाई तप करने के उपलक्ष्य में।

24000/- श्री सुमतिचन्दजी, नमनजी, संयमजी मेहता, पीपाड़सिटी, सहयोगार्थ।

12000/- श्री धर्मचन्दजी, हंसराजजी, पदमचन्दजी, अमितजी बाघमार 'कोसाना वाले', चेन्नई, सहयोगार्थ।

12000/- डॉ. (प्रो.) सुनीलजी मेहता 'सी.ए.', डॉ. अनीताजी मेहता, प्रत्युषजी मेहता, जोधपुर, अपने पूज्य पिताश्री स्व. श्री गौतमजी मेहता (नाहर) की प्रथम पुण्य तिथि पर उनकी पावन स्मृति में।

6000/- श्री विनोदजी भण्डारी सुपुत्र स्व.श्री दानमलजी भण्डारी, जोधपुर, सहयोगार्थ।

नम्र निवेदन

रत्नसंघ के सभी श्रावक-श्राविकाओं से विनम्र अनुरोध है कि संघ से सम्बन्धित समाचारों की संघ कार्यालय से प्रामाणिक जानकारी प्राप्त कर तथा समाचारों की पुष्टि करने के बाद ही व्हाट्स एप्प पर प्रेषित करें, ताकि संघ सदस्यों में समाचारों को लेकर भ्रांति नहीं हो |-धनपत सेठिया, संघमहामंत्री

आगामी पर्व

कार्तिक शुक्ला 5	शुक्रवार	01.11.2019	ज्ञानपंचमी
कार्तिक शुक्ला 6	शनिवार	02.11.2019	आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा. का 57 वां दीक्षा-दिवस
कार्तिक शुक्ला 8	सोमवार	04.11.2019	अष्टमी
कार्तिक शुक्ला 14	सोमवार	11.11.2019	चतुर्दशी
कार्तिक शुक्ला 15	मंगलवार	12.11.2019	पक्खी पर्व/ चातुर्मास समापन (चातुर्मासिक पक्खी) /वीर लोंकाशाह-जन्म जयन्ती
मार्गशीष कृष्णा 8	बुधवार	20.11.2019	अष्टमी
मार्गशीष कृष्णा 12	शनिवार	23.11.2019	आचार्यप्रवर पूज्यश्री विनयचन्दजी म.सा. का 104 वाँ स्मृति दिवस
मार्गशीष कृष्णा 14	सोमवार	25.11.2019	चतुर्दशी
मार्गशीष कृष्णा 30	मंगलवार	26.11.2019	पक्खी पर्व

BOOK PACKETS CONTAINING PERIODICALS Value of Periodical From Rs.1/- to Rs.20/- For First 100 gms or part thereof Rs. 2/-

स्वामी, प्रकाशक व मुद्रक धनपत सेठिया द्वारा अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, नेहरु पार्क, जोधपुर (राज.) से प्रकाशित, सम्पादक-प्रकाश सालेचा एवं इण्डियन मैप सर्विस, सेक्टर-जी, राममन्दिर के पास, शास्त्रीनगर, जोधपुर से मुद्रित

Contact No. 0291-2636763, 94610-26279 (WhatsApp)
Website- www.ratnasangh.com, Email : absjrhssangh@gmail.com

इस अंक का सौजन्य- गुरुभक्त संघनिष्ठ श्री कनकराज जी महेन्द्र जी कुम्भट-जोधपुर, मुम्बई